mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-116 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

29 अप्रैल 2025 मंगलवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

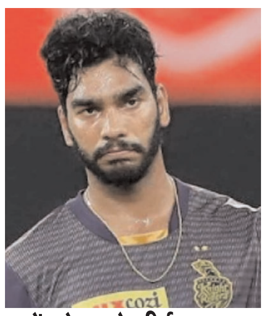

वेंकटेश को शीर्ष क्रम...

@ पेज 7

राष्ट्रपति ने 71 लोगों को पद्म अवॉर्ड से सम्मानित किया

पटना (एजेंसी)। , देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने आज राष्ट्रपति भवन के गणतंत्र मंडप में आयोजित नागरिक अलंकरण समारोह-द्व में वर्ष 2025 के लिए पद्म पुरस्कार प्रदान किए। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कुल 71 लोगों

- **सुशील मोदी और पंकज उधास को मरणोपरांत पद्म भूषण मिला**

को पद्म अवॉर्ड से सम्मानित किया, जिसमें 4 पद्म विभूषण, 10 पद्म भूषण और 57 पद्म श्री पुरस्कार शामिल हैं। 71 लोगों की इस लिस्ट में सुशील मोदी और पंकज उधास को मरणोपरांत पद्म भूषण प्रदान किया गया।

किन-किन को मिला पद्म विभूषण
71 लोगों की लिस्ट में जिन 4 विभूतियों को पद्म विभूषण से सम्मीनित किया गया है। उनके नाम आप नीचे लिस्ट के माध्यम से देख सकते हैं।
एम. टी. वासुदेवन नायर (मरणोपरांत),डॉ. दुव्वुर नागेश्वर रेड्डी,डॉ. लक्ष्मीनारायण सुब्रमण्यम, ओसामु सुजुकी (मरणोपरांत)
पद्म भूषण अवॉर्ड से किन-किन को किया गया सम्मानित
कुल 10 लोगों को पद्म भूषण अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है, जिनके नाम आप नीचे दी गई सूची में देख सकते हैं। नंदमुरी बालकृष्ण, विनोद कुमार धाम, सुशील कुमार मोदी (मरणोपरांत), शेखर कपूर एस अजित कुमार, पंकज आर. पटेल, डॉ.जोस चाको पेरियाप्पुरम, डॉ. अरकलगुड अनंतरामैया सूर्या प्रकाश, श्रीजेश पी. आर. पंकज केशुभाई उधास

संक्षिप्त समाचार

यूरोप के कई देशों में बिजली गुल, ठप हुई मेट्रो और हवाई सेवाएं

यूरोप (एजेंसी)। यूरोप के कई देशों में ब्लैकआउट हो गया है। फ्रांस, स्पेन, पुर्तगाल और बेल्जियम में बिजली सप्लाई ठप हो गई। खबर ये भी है कि बिजली कटने से हवाई और मेट्रो सेवा पर असर पड़ा है। इससे जनता को काफी परेशानी हो रही है। बिजली क्यों कटी, फिलहाल इसकी वजह की जांच की जा रही है। लेकिन साथ ही ये माना जा रहा है कि ये एक साइबर हमला भी हो सकता है। स्पेन के नेशनल ग्रिड ऑपरेटर 'रेड एलेक्ट्रिका' ने बयान जारी कर बताया कि पूरे देश

में बिजली आपूर्ति बहाल करने के लिए सेक्टर कंपनियों के साथ मिलकर कई ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। इसके अलावा पुर्तगाल के ग्रिड ऑपरेटर 'ई-रेडेस' ने भी बताया कि यह संकट यूरोपीय पावर ग्रिड में आई समस्या के कारण उत्पन्न हुआ है। इस ब्लैकआउट ने केवल परिवहन सेवाओं को ही प्रभावित नहीं किया, बल्कि अन्य प्रमुख आयोजनों को भी बाधित किया। मैड्रिड में चल रहे वार्षिक क्ले-कोर्ट टेनिस टूर्नामेंट, मैड्रिड ओपन पर भी इसका असर पड़ा है। बिजली कटने से कई मैचों को स्थगित करना पड़ा . बता दें कि यूरोप में इससे पहले भी छोटी-छोटी तकनीकी गड़बड़ियों की वजह से बड़े ब्लैकआउट हुए हैं। साल 2003 में स्विट्जरलैंड में एक पेड़ से बिजली लाइन कटने के बाद पूरा इटली अंधेरे में डूब गया था।

भारत के खिलाफ पाकिस्तान के मंत्री का बड़ा बयान

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान और भारत के बीच तनातनी बढ़ती जा रही है। इस बीच पाकिस्तान के गृह राज्य मंत्री तलाल चौधरी ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने तल्ख लहजे में कहा कि भारत किसी किस्म की गलती नहीं करेगा और अगर गलती करेगा तो उसके रिस्पॉन्स में पाकिस्तान का जो जवाब है वो नई तारीख

लिख देगा। चौधरी ने कहा कि अगर भारत ने किसी किस्म के एडवेंचर की, किसी किस्म की इस तरह की दोबारा से ऑपरेशन या इसी तरह किसी को छिपाने के लिए कोई हरकत करेगा तो इनकी गलती के बाद पाकिस्तान भी रिस्पॉन्स का आगाज करेगा जो है.. हमारा इंतकाम। तलाल चौधरी ने आगे कहा कि हम अमन चाहते हैं लेकिन कमजोर नहीं हैं, हम डरते नहीं हैं..अल्लाह के हुक्म से हम अमन चाहते हैं कि ये हिस्सा और पूरी दुनिया अमन में रहे, वरना पाकिस्तान के लोग और पाकिस्तान की फौज जब चाहे इस तरह की हिमाकत और इस तरह की बड़े-बड़े दावे करने वालों का मुंह दूसरी तरफ घुमा देंगे। पाकिस्तान के सूचना प्रसारण मंत्री अताउल्लाह तरार ने कहा कि पाकिस्तान को कमजोर ना समझे भारत। भारत की हर हरकत का हम जवाब देंगे। हम भरपूर ताकत और कूवत के साथ जवाब देंगे. और भारत किसी भूल में ना रहे। हमारी किसी भी चीज को कोई कमजोरी ना समझा जाए. हम तैयार हैं, मुंहतोड़ जवाब देने के लिए। पानी के मामले में भरपूर तरीके से जवाब देने को तैयार हैं. मगर अगर कोई मिसएडवेंचर करता है तो उसको पता है कि जो उसको यहां से जवाब मिलना है, तो आइंदा के बाद जुर्रत नहीं करेगा।

कश्मीरी छात्रा के साथ जामिया यूनिवर्सिटी में हुई छेड़खानी

नई दिल्ली (एजेंसी)। जामिया मिल्लिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी में कल एक ऐसी घटना घटी जिसके बाद वहां पढ़ने वाले छात्र भड़क गए। दरअसल कल जामिया यूनिवर्सटी में पढ़ रही एक कश्मीरी छात्रा के साथ छेड़छाड़ की घटना हुई और इस घटना को वहीं के कैंटिन में काम करने वाले एक कुक ने अंजाम दिया। इसके बाद क्या था,

दूसरे छात्रों को जब इसके बारे में पता चला तो वो गुस्से से आगे बबुला हो गए और सभी का गुस्सा उस कुक पर फूटा जिसने कश्मीरी छात्रा के साथ छेड़छाड़ किया था। इसके बाद उस कुक की उन स्टूडेंट के साथ मारपीट भी हुई। आइए आपको मामले की पूरी जानकारी देते हैं। कल देर शाम जामिया मिल्लिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी में एक कश्मीरी छात्रा मेन गेट की तरफ बाहर आ रही थी। इसी दौरान वहां काम करने वाले एक कुक ने उसके साथ छेड़खानी की। इसके विरोध में वहां कुछ स्टूडेंट से कुक की मारपीट भी हुई। इस घटना के बाद आज यानी 28 अप्रैल 2025 को उस कश्मीरी छात्रा ने पुलिस के सामने लिखित शिकायत दर्ज करवाई जिसके बाद मामले में कार्रवाई करते हुए पुलिस ने उस आरोपी कुक को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने जिस आरोपी कुक को गिरफ्तार किया है उसका नाम आदिब है और वो नूंह मेवात का रहने वाला है। अभी बीते शुक्रवार को ही जामिया मिल्लिया इस्लामिया यूनवर्सिटी से झड़प की एक खबर सामने आई थी। न्यूज एजेंसी पीटीआई के मुताबिक बीते शुक्रवार देर रात वहां छात्रों के दो ग्रुप में कथित तौर पर झड़प हो गई। उस घटना में वहां कई लोग घायल भी हुए थे मगर इस मामले में वहां के प्रशासन की तरफ से तत्काल कोई रिएक्शन नहीं मिली। इतना ही नहीं इस घटना के संबंध में पुलिस को भी कोई शिकायत दर्ज नहीं कराई गई। कुछ सूत्रों की मानें तो उस झड़प में 5-6 छात्र घायल हुए थे जिनका इलाज रूअंसारी स्वास्थ्य केंद्र में हुआ।

भारत और फ्रांस के बीच हुई यह बड़ी डील

भारतीय नौसेना की ताकत को मिलेगी और भी मजबूती

नई दिल्ली (एजेंसी)। हमारी नौसेना की ताकत को बढ़ाने के लिए भारत की सरकार ने फ्रांस की सरकार के साथ राफेल विमान की एक डील की है। भारत और फ्रांस की सरकारों ने कुल 26 राफेल विमानों की डील की है और ये सभी राफेल भारतीय नौसेना के लिए हैं। आपको बता दें कि इन 26 राफेल में 22 सिंगल सीटर और चार ट्विन सीटर होंगे। इस डील के लिए इंटर-गवर्मेंटल एग्रीमेंट (द्धव्र) पर साइन हो गए हैं। इस डील में ट्रेनिंग, सिम्युलेटर, एसोसिएटेड इक्विपमेंट, हथियार और परफॉर्मेंस आधारत लॉजिस्टिक शामिल होंगे। इतना ही नहीं अभी भारतीय वायुसेना के मौजूदा राफेल बेड़े के लिए अतिरिक्त उपकरण भी इस डील में शामिल हैं।

28 अप्रैल 2025 को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और फ्रांस के आर्म्ड फोर्स मिनिस्टर सेबेस्टियन लेकोर्नू ने द्धव्र पर हस्ताक्षर किए हैं। नई दिल्ली में नौसेना भवन में एग्रीमेंट के साइन किए हुए कॉपीज, विमान पैकेज आपूर्ति प्रोटोकॉल

और हथियार पैकेज आपूर्ति प्रोटोकॉल की भी साइन की हुई कॉपिज को रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह की उपस्थिति में एक्सचेंज किया गया।

आपको बता दें कि आत्मनिर्भर भारत पर सरकार का फोकस है और उसकी के तहत समझौते में यह भी है कि स्वदेशी हथियारों का एकीकरण भारत में हो इसके लिए टेक्नोलॉजी भी ट्रांसफर किए जाएंगे। ऐसा बताया जा रहा है कि इस सौदे के होने के बाद रूस्ब्रह्म में बड़ी संख्या में रोजगार उत्पन्न होंगे। आपको इन सभी जानकारियों के साथ यह भी बताते चलें कि आज जो डील हुई है उसके पूरे होने की उम्मीद साल 2030 तक लगाई जा रही है। इसका मतलब भारतीय नौसेना के लिए ये सभी राफेल 2030 तक भारत आ सकते हैं।

मंदिर पवित्रता विवाद के बाद ज्ञान देव आहूजा पर बीजेपी की बड़ी कार्रवाई,

बालाघाट (एजेंसी)। राजस्थान में सत्तारूढ़ भाजपा ने रविवार को अपने पूर्व विधायक ज्ञान देव आहूजा को पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से निष्कासित कर दिया है, जो हाल ही में मंदिर पवित्रता विवाद के केंद्र में रहे थे। भाजपा के अनुशासन समिति की जांच के बाद आहूजा के खिलाफ यह कार्रवाई की गई, जैसा कि पार्टी के आदेश में कहा गया है। इसमें कहा गया है कि भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौर ने अनुशासनहीनता के लिए आहूजा की पार्टी की प्राथमिक सदस्यता समाप्त करने के आदेश दिए हैं। आहूजा ने इस महीने की शुरुआत में तब विवाद खड़ा कर दिया था जब उन्होंने अलवर में राम मंदिर में गंगाजल छिड़ककर उसे ÷शुद्ध÷ किया था। इससे पहले कांग्रेस नेता टीकाराम जूली ने वहां एक प्राण प्रतिष्ठा समारोह में हिस्सा लिया था। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने आहूजा के इस कृत्य को दलित का ÷अपमान÷ बताया था। रविवार को आहूजा ने भाजपा की अनुशासन समिति के समक्ष अपना पक्ष रखा और बाद में संवाददाताओं से बात करते हुए कहा, ÷मैंने कोई भी दलित विरोधी काम नहीं किया है।÷ उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा ने कांग्रेस की प्रचार-प्रसार की चालों का शिकार होकर उन्हें निष्कासित किया है। आहूजा ने कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं, जिसमें पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे भी शामिल हैं, पर मानहानि का आरोप लगाया और कहा कि वह इस मामले में केस करेंगे।

ओवैसी ने पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर शाहिद अफरीदी को बताया जोकर

पहलगाम पर की थी टिप्पणी

छत्रपति संभाजीनगर (एजेंसी)। पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर शाहिद अफरीदी की टिप्पणी से एआईएमआईएम सांसद असदुद्दीन ओवैसी बुरी तरह भड़क गए। जब रिपोर्टर ने ओवैसी से इस बारे में सवाल पूछा तो ओवैसी ने शाहिद अफरीदी को जोकर बताया। ओवैसी ने कहा, %वह कौन है? आप मेरे सामने इन जोकरों का नाम क्यों ले रहे हैं?% ओवैसी का अफरीदी के सवाल पर इस तरह भड़कने का वीडियो भी सामने आया है। ओवैसी ने ये टिप्पणी महाराष्ट्र के संभाजीनगर में की।

पाकिस्तानी क्रिकेट टीम के पूर्व खिलाड़ी शाहिद अफरीदी ने पहलगाम में हुए आतंकी हमले पर टिप्पणी की थी। उन्होंने कहा था, %भारत खुद ही लोगों को मरवाता है और फिर खुद ही कहते हैं कि वो जिंदा हैं।% अफरीदी ने ये भी कहा था, %भारत आरोप लगाने से पहले साबित करे कि इस हमले में पाकिस्तान का हाथ था।%

अफरीदी ने कहा, %पाकिस्तान के एम्बेसडर होने के नाते मैं यही कहूंगा कि स्पोर्ट्स डिप्लोमेसी को लेकर मेरा बहुत मजबूत स्टैंड है। इस पर सियासत नहीं होनी चाहिए। पड़ोसी मुल्क हैं, एक-दूसरे का ख्याल रखा जाए। हालांकि मैं यह भी कहूंगा कि जब

आतंकी हमला हुआ तो आपने तुरंत पाकिस्तान पर इलजाम लगा दिया। इस तरह से चीजें नहीं होनी चाहिए। इससे आपसी रिश्ते खराब होते हैं। जहां आतंकी हमला हुआ वहां आपके 8 लाख सैनिक हैं। क्यों कोई फौजी लोगों को बचाने नहीं आया। खुद ही ब्लंडर करते हैं, खुद ही लोगो को मरवाते हैं और फिर खुद ही कहते हैं कि वो जिंदा हैं। इस तरह से न करें।

गौरतलब है कि 22 अप्रैल 2025 को कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमला हुआ था। इस आतंकी हमले में 26 लोगों की मौत हुई थी। इस हमले के बाद भारत, पाकिस्तान के खिलाफ सख्त रुख अपना रहा है। ऐसे में पाकिस्तान घबराया हुआ है और उसे डर है कि कहीं भारत, पाकिस्तान पर हमला न कर दे।

तालिबानी सरकार से मिले भारतीय राजनयिक

भारत-पाक तनाव के बीच विभिन्न मुद्दों पर हुई चर्चा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के विदेश मंत्रालय (एमईए) के विशेष प्रतिनिधि और अफगानिस्तान, ईरान और पाकिस्तान विभाग के महानिदेशक आनंद प्रकाश ने अफगानिस्तान के विदेश मंत्री मौलवी आमिर खान मुत्ताकी के साथ मुलाकात की। इस बैठक में उनकी चर्चा द्विपक्षीय राजनीतिक संबंधों को मजबूत करने, व्यापार और पारगमन सहयोग को बढ़ाने और हाल के क्षेत्रीय घटनाक्रमों पर विचारों के आदान-प्रदान पर केंद्रित थी। दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय जुड़ाव, वीजा प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने, प्रतिनिधिमंडलों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने और विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग को मजबूत करने के महत्व पर जोर दिया।

यह बैठक भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव के बीच हुई है क्योंकि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के साथ राजनयिक संबंधों को कम कर दिया है। बता दें कि 22 अप्रैल को भारत में कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में 26

लोग मारे गए थे, जिनमें अधिकतर पर्यटक थे। इस घटना के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव की स्थिति है।

बैठक के दौरान अफगानिस्तान के विदेश मंत्री ने दोनों देशों के बीच लोगों की आवाजाही को सुविधाजनक बनाने पर जोर दिया। साथ ही व्यापारियों, मरीजों और छात्रों के लिए वीजा जारी करने के प्रोसेस को सामान्य बनाने का आह्वान भी किया।

भारतीय राजदूत आनंद प्रकाश ने भी दोनों देशों के बीच विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग को और गहरा करने की उम्मीद जताई। विदेश मंत्रालय की प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, आनंद प्रकाश ने अफगानिस्तान को अपनी सहायता जारी रखने के भारत के इरादे को दोहराया और बुनियादी ढांचे की परियोजनाओं में निवेश करने में भारत की रुचि से अवगत कराया। इसमें उन पहलों को फिर से शुरू करना शामिल है, जिन्हें पहले रोक दिया गया था।

मंच पर कर्नाटक के सीएम सिद्धारमैया ने खोया आपा

उन्होंने ड्यूटी पर तैनात पुलिस अधिकारी को फटकार लगा दी

नई दिल्ली (एजेंसी)। महंगाई को लेकर केंद्र सरकार के खिलाफ आज कर्नाटक में विरोध प्रदर्शन हुआ। इसमें कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने भी लोगों को संबोधित किया लेकिन इस दौरान एक वाकया ऐसा हुआ जिसने सभी का ध्यान खींच लिया। दरअसल, सीएम सिद्धारमैया को सभा में मौजूद लोगों की नाराजगी का सामना करना पड़ा। सीएम पर पाकिस्तान समर्थक होने का आरोप लगाते हुए लोगों ने काला कपड़ा दिखाकर प्रदर्शन किया। इससे कर्नाटक के सीएम नाराज हो गए और उन्होंने ड्यूटी पर तैनात पुलिस अधिकारी को फटकार लगा दी। हालांकि उन्होंने कहा कि विरोध प्रदर्शन बीजेपी समर्थकों ने किया है।

सिद्धारमैया की नाराजगी और पुलिस अधिकारी को फटकार लगाने का पूरा वाकया कैमरे में कैद हो गया। इसका

वीडियो सामने आया है जिसमें दिख रहा है कि जैसे ही बीजेपी कार्यकर्ताओं ने उनके खिलाफ नारेबाजी शुरू की तब उन्होंने उन्हें चुप रहने कहा।

सीएम ने कहा, ए चुप हो जाओ, कौन हैं ये? इसके बाद कांग्रेस के सीनियर नेता रणदीप सिंह सुरजेवाला ने उन्हें समझाया कि वे अपना भाषण जारी रखें लेकिन सीएम ने उनकी बात नहीं सुनी।

इसके बाद कैबिनेट मंत्री एचके पाटिल ने भी उनसे कहा कि बीजेपी के लोग नारेबाजी कर रहे हैं वो कांग्रेस पार्टी जिंदाबाद के नारे लगवाकर भाषण जारी रखें लेकिन सीएम ने आपा खो दिया। प्रदर्शनकारियों को हटाने की कोशिश कर रहे पुलिस अधिकारी को सीएम ने गुस्से में बुलाया। इस दौरान वह कहते सुने गए- %%ए पुलिस, यहां आ, स्क्कौन है, तुम पहले यहां आओ।%% जब पुलिस अधिकारी मंच पर पहुंच गए तो सीएम ने उनकी ओर हाथ बढ़ाया और डांट लगाते हुए कहा कि ÷तुम लोग कर क्या रहे हो, ये लोग यहां कैसे पहुंच गए, क्या काम कर रहे हो?

वहीं, आपको बता दें कि पहलगाम आतंकी हमले के बाद एक तरफ जहां भारत और पाकिस्तान संबंध एक बार फिर पटरी से उतर गए हैं। वहीं, पाकिस्तान पर हमले को लेकर सीएम सिद्धारमैया के बयान पर खूब चर्चा हो रही है। सिद्धारमैया ने शनिवार को पत्रकारों से बातचीत में कहा था कि हमले के बाद हुई सर्वदलीय बैठक के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को वहां होना चाहिए था। वह बिहार में चुनाव प्रचार करने गए थे।

यूपी के कौशांबी में मिट्टी का टीला धंसने से 5 लोगों की दर्दनाक मौत

अलीगढ़ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के कौशांबी जिले में एक दिल दहला देने वाला हादसा हुआ है। यहां मिट्टी का टीला धंसने के कारण तुल 5 लोगों की दर्दनाक तरीके से मौत हो गई है। जानकारी के मुताबिक, हादसे में मृत लोगों में महिलाएं और दो किशोरी भी शामिल है। इनके अलावा इस हादसे में कई अन्य महिलाएं घायल भी हो गई हैं। सभी घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। आइए जानते हैं इस हादसे के बारे में सबकुछ। दरअसल, ये पूरी घटना कौशांबी जिले के कोखराज थाना क्षेत्र के टिकरडीह गांव का है। यहां

मिट्टी निकालने के दौरान बड़ा हादसा हो गया। मिट्टी का टीला अचानक धंस गया। इस हादसे की चपेट में आकर किशोरियां समेत 5 महिलाओं की मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक, हादसे में मरने वालों में 3 महिलाएं और दो किशोरी शामिल है। जबकि कई महिलाएं घायल हो गई। इस हादसे की सूचना मिलते ही पूरे गांव में हड़कंप मच गया। आसपास के लोगों ने किसी तरह मिट्टी हटाकर घायलों को बाहर निकाला। और इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासन की टीम मौके पर पहुंच गई। मृतकों के शव पोस्टमॉर्टम के लिए भेजे गए हैं। जबकि घायलों का अस्पताल में इलाज चल रहा है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

27 प्रतिशत आरक्षण की लड़ाई लड़ेगा मीणा समाज

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल में मीणा समाज शक्ति संगठन ने रविवार को गांधी भवन में अपनी प्रदेश स्तरीय बैठक की। बैठक में निर्णय लिया कि पिछड़े वर्ग के छात्रों के सेंट्रल कास्ट सर्टिफिकेट की वैलिडिटी 5 साल की कराई जाएगी। अभी इसकी वैलिडिटी सिर्फ 1 साल की हैं। बैठक में प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष श्याम मीणा और प्रदेश उपाध्यक्ष राजकुमार पटेल ने यह प्रस्ताव रखा है। संगठन अपनी मांग को लेकर ज्ञापन सौंपेगा, आंदोलन और प्रदर्शन भी करेगा। महामंत्री माखन मीणा ने बताया कि 1 मई से प्रदेश में सदस्यता अभियान की शुरुआत की जाएगी। इसमें सामान्य और सक्रिय सदस्य बनाए जाएंगे। प्रदेश प्रवक्ता घनश्याम रावत ने कहा कि जून और जुलाई माह में संगठन की कार्यकारिणी का गठन होगा। इस साल प्रदेश स्तरीय प्रैक्टिस सेशन गांधी सागर डेम पर आयोजित किया जाएगा। मीणा समाज के विभिन्न जिलों में प्रैक्टिस सेशन अगस्त में आयोजित होंगे। वहीं, प्रदेश स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह सितंबर में होगा। संगठन के स्थापना दिवस पर पूरे प्रदेश में कुल गोत्र के पौधों का रोपण कर 'गोत्र वाटिका' बनाई जाएगी। मीणा समाज मध्य प्रदेश के पिछड़े वर्ग में शामिल है। इसलिए समाज 27 प्रतिशत आरक्षण दिलाने की लड़ाई भी लड़ेगा। संगठन विस्तार के लिए प्रदेश को चार प्रांतों में बांटा गया है। मध्य भारत, मालवांचल, नर्मदांचल और चंबल प्रांत बनाए गए हैं। इससे संगठन का विस्तार और प्रवास कार्य में सुविधा होगी। बैठक में भोपाल अध्यक्ष जितेंद्र मीणा, गुना अध्यक्ष पुरुषोत्तम मीणा, प्रांतीय संयोजक रूप सिंह, प्रदेश उपाध्यक्ष रामगोपाल मीणा समेत कई जिलों के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

गोवंश के शव से बने खाद से तैयार होंगे जंगल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। शहर में बड़े स्तर पर पौधरोपण करने की तैयारी की जा रही है। खास बात यह है कि इन पौधों को समाधि खाद (मृत गोवंश के शरीर से बना खाद) से पोषित किया जाएगा। प्रशासन ने इसके लिए शहर के अलग अलग हिस्सों में करीब 15 हेक्टेयर जमीन चिह्नित की है। राम आस्था मिशन फाउंडेशन की ओर से इन स्थानों पर पौधरोपण किया जाएगा। इसके लिए संस्था और प्रशासन के बीच करार किया गया है। यहां होगा पौधरोपण = सूखीसेवनिया स्थित गोशाला समेत एयरपोर्ट क्षेत्र, कलियासोत, केरवा डेम, ग्राम पंचायत बर्रीखेड़ा बैरसिया में मियाबाकी पद्धति से घने जंगल तैयार किए जाएंगे। पहले कभी इन स्थानों पर झाड़ के घने जंगल हुआ करते थे। यहां गीले कचरे, जलकुंभी, मंदिरों से निकलने वाले फल-फूल के वेस्ट, गोशालाओं के जैविक खाद व मृत पशुओं के शरीर के उपयोग से बने समाधि खाद का उपयोग किया जाएगा।

ऐसे बनता है समाधि खाद... 5 फीट गहरा गड्ढा खोदकर उसमें नमक बिछाते हैं। इसके ऊपर गोवंश का शव रखकर ऊपर फिर नमक डालकर मिट्?टी से ढंक दिया जाता है। सालभर में शव हड्डियों समेत गल जाता है। यूं तैयार खाद को समाधि खाद कहते हैं। यह बेहद उच्च कोटि का खाद होता है। गर्मी के इन महीनों में जमीन के साथ ही साथ पौधे भी तैयार किए जाएंगे, जैसे ही बारिश का मौसम आएगा पौधरोपण शुरू कर दिया जाएगा।

एमएसएमई को मिलेगा ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। घरों से चलने वाले अचार-पापड़ जैसे उद्योगों के अलावा अब मप्र के लघु-मध्यम उद्योग देश और विदेशों में भी अपने उत्पाद ऑनलाइन बेच सकेंगे। इन उद्योगों को लघु उद्योग भारती ई-व्यापार प्लेटफॉर्म (लीप) की मदद से दूसरे व्यापारियों और सीधे उपभोक्ताओं से जुड़ने में मदद मिलेगी।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव इस पोर्टल की लॉन्चिंग मंगलवार को करेंगे। सूक्ष्म, लघु और मध्यम (एमएसएमई) उद्योगों के प्रतिनिधि संगठन लघु उद्योग भारती ने राष्ट्रीय स्तर पर इस पोर्टल को तैयार किया है।

मंत्री सारंग ने बिजली नगर कॉलोनी में पार्क सहित विकास कार्यों का किया भूमि-पूजन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने रविवार को नरेला विधानसभा क्षेत्र के वार्ड 70, बिजली नगर कॉलोनी में पार्क निर्माण सहित विभिन्न विकास कार्यों का भूमि-पूजन किया। समारोह में मंत्री श्री सारंग ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि वर्ष 2008 से पहले नरेला विधानसभा क्षेत्र में मूलभूत सुविधाओं का अभाव था। विगत वर्षों में नरेला ने अभूतपूर्व विकास यात्रा तय की है। आज प्रत्येक घर में नर्मदा जल की उपलब्धता, पक्की सड़कों का जाल, आदर्श ड्रेनेज सिस्टम और उच्च गुणवत्ता के थीम पार्क जैसे अनेक विकास कार्य क्षेत्रवासियों को समर्पित किए जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि विकास का यह सिलसिला आगे भी तेजी से जारी रहेगा। भूमि-पूजन कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्थानीय जनप्रतिनिधि, वार्डवासी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

मंत्री श्री सारंग का बिजली नगर कॉलोनी स्थित शासकीय विद्यालय के सामने आयोजित समारोह में क्षेत्रवासियों ने भव्य स्वागत किया। विभिन्न स्वागत मंचों से पुष्पवर्षा कर और ढोल-ताशों की गूंज के बीच उनका अभिनंदन किया गया। मंत्री श्री सारंग ने क्षेत्रवासियों के प्रेम एवं समर्थन के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया और कहा कि जनता का विश्वास ही उनकी प्रेरणा शक्ति है।

ई-केवायसी अनिवार्य, 30 अप्रैल तक जरूर करायें -मंत्री राजपूत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राशन लेने वाले सभी लाभार्थियों के लिए ई-केवायसी अनिवार्य कर दिया गया है। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया कि 9 से 30 अप्रैल तक प्रदेश में ई-केवायसी प्रक्रिया को पूर्ण करने के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि यदि कोई लाभार्थी 30 अप्रैल तक अपनी ई-केवायसी पूरी नहीं कराते हैं, तो उसे मई महीने से राशन मिलने में असुविधा हो सकती है। मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि हितग्राही 30 अप्रैल तक ई-केवायसी जरूर करायें। मंत्री श्री राजपूत ने जानकारी दी कि लाभार्थियों की सुविधा के लिए मेरा ई-केवायसी नामक मोबाइल ऐप लॉन्च किया गया है। इस ऐप के माध्यम से कोई भी लाभार्थी, चाहे वह वृद्ध, दिव्यांग या सामान्य व्यक्ति हो, घर बैठे अपनी और अपने परिजनों की ई-केवायसी कर सकता है। इसके लिए लाभार्थियों को अपने आधार नंबर और ओटीपी की आवश्यकता होगी। मंत्री श्री राजपूत ने सभी राशन लाभार्थियों से अपील की है कि वे जल्द से जल्द अपनी और अपने परिवार के सभी सदस्यों की ई-केवायसी पूरी करवा लें। उन्होंने कहा कि यह प्रक्रिया समय पर पूरी करना बहुत जरूरी है ताकि मई से राशन वितरण में रुकावट नहीं आए।

मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि राशन लेने वाले हितग्राहियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए हर जिले के गांव और वार्ड स्तर पर ई-केवायसी शिविर लगाए जा रहे हैं। इन शिविरों में पीओएस मशीन के जरिए हितग्राहियों की अंगूठा लगाकर ई-केवायसी की जा रही है। मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि यह शिविर सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के तहत राशन वितरण की प्रक्रिया को सुचारु और पारदर्शी बनाने के लिए आयोजित किए जा रहे हैं।

मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि बुजुर्गों और दिव्यांगों के लिए भी विशेष व्यवस्था की गई है। टीम घर-घर जाकर इन लोगों की ई-केवायसी कर रही है, ताकि उन्हें किसी प्रकार की असुविधा का सामना नहीं करना पड़े।

एवीजीसी-एक्सआर क्षेत्र में निवेश की अपार संभावनाएं - एसीएस दुबे

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के विजन को साकार करते हुए प्रदेश में आईटी और संबंधित उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा पहली सेक्टर आधारित टेक ग्रोथ कॉन्क्लेव का आयोजन किया जा रहा है। अपर मुख्य सचिव विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग श्री संजय दुबे ने मध्यप्रदेश के उभरते एवीजीसी-एक्सआर (एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग,कॉमिक्स और एक्सटेंडेड रियलिटी) ईकोसिस्टम विषय पर राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस- 3 को ब्रिलियेंट कन्वेशन सेंटर, इंदौर में संबोधित किया। उन्होंने एवीजीसी-एक्सआर क्षेत्र के उद्योपतियों ने इस क्षेत्र में मध्यप्रदेश की संभावनाओं/ निवेश पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि एवीजीसी-एक्सआर क्षेत्र में मध्यप्रदेश में अपार संभावनाएं हैं। राज्य सरकार इस क्षेत्र में निवेश और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए पूरी तरह से तैयार है। एसीएस श्री दुबे ने बताया कि प्रदेश में इस उद्योग के विकास के लिए अनुकूल माहौल हैं।

प्रोजेक्ट डायरेक्टर एमपीएसईडीसी श्री गुरु प्रसाद, श्री आशीष कुलकर्णी, संस्थापक, पुन्नरीयुग आर्ट विजन प्राइवेट लिमिटेड, श्री मनीष राजोरिया, पर्पल टर्टल के सह-निर्माता, श्री रेन चिलका, संस्थापक - ग्रीन गोल्ड एनीमेशन प्राइवेट लिमिटेड सहित कई उद्योगपति/निवेशक उपस्थित थे।

एसीएस श्री दुबे ने कहा कि 4 नई नीतियों के लिए गाइडलाइंस का अनावरण मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में कॉन्क्लेव के दौरान किया जाएगा। एसीएस श्री दुबे ने जानकारी दी कि जीआईएस- 2025 के दौरान की गई राज्य सरकार की प्रतिबद्धताएं अब धरातल पर उतरने लगी हैं। कई नई पहलें भी आज साकार होने जा रही हैं। आज %नो-क्वेरी पोर्टल% भी लॉन्च किया गया है, जहां आवेदक बिना भौतिक दस्तावेज प्रस्तुत किए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं और 30 दिनों में जवाब प्राप्त कर सकते हैं। एसीएस श्री दुबे कहा राज्य में एवीजीसी क्षेत्र के लिए 4 उन्नत प्रयोगशालाएँ स्थापित करने और एक विशेष मीडिया पार्क बनाने की भी योजना है। एसीएस श्री दुबे ने बताया कि राज्य में प्रतिभाशाली युवाओं की बड़ी संख्या है, जो एवीजीसी सेक्टर में राष्ट्रीय नेतृत्व करने की ओर अग्रसर हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव 30 अप्रैल को करेंगे श्रमिक परिवारों को राशि वितरित

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 30 अप्रैल को धार जिले के उमरबन में संबल योजना में अनुग्रह सहायता के 27 हजार 523 प्रकरणों में राशि रूपये 600 करोड़ सिंगल क्लिक से वितरित करेंगे। कार्यक्रम में श्रम व पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल एवं स्थानीय जन प्रतिनिधि, हितग्राही उपस्थित रहेंगे। मुख्यमंत्री जनकल्याण संबल योजना, प्रदेश में असंगठित क्षेत्र में कार्यरत लाखों श्रमिकों के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण योजना है। इसमें अनुग्रह सहायता योजना के अंतर्गत दुघर्टना में मृत्यु होने पर 4 लाख रूपये एवं सामान्य मृत्यु होने पर 2 लाख रूपये प्रदान किये जाते हैं। इसी प्रकार स्थायी अपंगता पर 2 लाख रूपये एवं आंशिक स्थायी अपंगता पर 01 लाख रूपये तथा अंत्येष्टि सहायता के रूप में 5 हजार रूपये प्रदान किये जाते हैं। संबल योजना में जहाँ एक ओर महिला श्रमिक को प्रसूति सहायता के रूप में 16 हजार रूपये दिये जाते हैं तो वहीं दूसरी ओर श्रमिकों के बच्चों को महाविद्यालय शिक्षा प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत उच्च शिक्षा में शिक्षा हेतु सम्पूर्ण शिक्षण शुल्क राज्य सरकार द्वारा वहन किया जाता है। नीति आयोग की पहल पर प्रदेश के गिग एवं प्लेटफार्म वर्कर्स को भी संबंल योजना के अंतर्गत सम्मिलित किया जाकर इनका पंजीयन प्रारम्भ किया गया है एवं इन्हें भी संबल योजना के अंतर्गत समस्त लाभ प्रदान किये जा रहे हैं। संबल हितग्राहियों को खाद्यान्न पात्रता पर्ची भी प्राप्त होती है जिससे वे केन्द्र तथा राज्य सरकार द्वारा रियायती दरों पर राशन प्राप्त कर रहे हैं। संबल योजना प्रदेश में असंगठित क्षेत्र में कार्यरत लाखों श्रमिकों के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण योजना है। इसमें श्रमिक को जन्म से लेकर मृत्यु तक आर्थिक सहायता प्राप्त होती है। प्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश के लाखों निर्माण श्रमिकों के लिये भी निर्माण मंडल के माध्यम से कई योजनायें संचालित की जाती हैं।

प्रदेश में कक्षा एक से 12वीं तक 72 लाख से अधिक विद्यार्थियों का नामांकन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। शैक्षणिक सत्र 2025-26 में अब तक कक्षा एक से 12वीं तक लगभग 72 लाख 40 हजार से अधिक विद्यार्थी निर्धारित कक्षाओं में अपना नामांकन दर्ज करवा चुके हैं। वहीं कक्षा 5 उत्तीर्ण करने वाले लगभग 5 लाख विद्यार्थी कक्षा में 6 में तथा कक्षा 8 उत्तीर्ण करने वाले करीब 4 लाख 84 हजार से अधिक विद्यार्थी कक्षा 9 में प्रवेश ले चुके हैं। कक्षा एक से 8वीं तक में लगभग 59 लाख 66 हजार से अधिक एवं कक्षा 9 से 12वीं में 12 लाख 73 हजार से अधिक विद्यार्थी अभी तक नये शैक्षणिक सत्र वर्ष 2025-26 में प्रवेश ले चुके हैं। प्रदेश में एक अप्रैल से शुरू हुए नये शैक्षणिक सत्र में अब तक लगभग एक लाख 62 हजार से अधिक बच्चों का कक्षा एक में प्रवेश हो चुका है। इनमें से लगभग एक लाख से अधिक बच्चों के अभिभावकों ने उनका प्रवेश शासकीय विद्यालयों में कराया है। शेष करीब 35 हजार बच्चे निजी विद्यालयों की कक्षा एक में प्रवेश ले चुके है। उल्लेखनीय है कि पिछले वर्ष तक स्कूल चलें हम अभियान का संचालन जून माह में किया जाता था जिसे इस वर्ष मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में एक अप्रैल से ही संचालित किया गया है। स्कूल चलें हम अभियान के राज्य स्तरीय कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विद्यार्थियों के नामांकन के लिए एज्युकेशन पोर्टल 3.0 का एक अप्रैल को लोकार्पण किया था।

2 मई को सभी जिलों में मनेगा लाड़ली लक्ष्मी उत्सव

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री लाड़ली लक्ष्मी योजना अन्तर्गत 2 मई 2025 को प्रदेश में लाड़ली लक्ष्मी उत्सव जिला, नगरीय निकायों एवं ग्राम पंचायत पर उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाएगा। इसमें स्थानीय प्रतिनिधि, लाड़ली बालिकाएं, उनके अभिभावक, लाड़ली क्लब की अध्यक्ष और सदस्य सक्रिय रूप से भाग लेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि लाड़ली लक्ष्मी योजना मध्यप्रदेश सरकार की बेटियों के प्रति समर्पित सोच का प्रतीक है। हमारा लक्ष्य है कि हर बेटी को सम्मान, शिक्षा और आत्म-निर्भरता के अवसर प्राप्त हों। लाड़ली लक्ष्मी उत्सव एक नई ऊर्जा और विश्वास का संचार करेगा। उन्होंने प्रत्येक जिला और निकाय स्तर पर कार्यक्रमों का व्यापक प्रचार-प्रसार सुनिश्चित करने के निर्देश दिये हैं, जिससे समाज में बेटियों के प्रति सकारात्मक सोच और सशक्तिकरण का वातावरण तैयार हो। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि लाड़ली लक्ष्मी उत्सव केवल एक कार्यक्रम नहीं बल्कि बेटियों के सम्मान, सुरक्षा और सशक्तिकरण के प्रति साझा संकल्प है।

लाड़ली लक्ष्मी उत्सव का संचालन स्वयं लाड़ली बालिकाओं द्वारा किया जाएगा। इसमें कन्या-पूजन, दीप प्रज्ज्वलन, लाड़ली बालिकाओं के प्रेरक उद्बोधन और अपराजिता कार्यक्रम अन्तर्गत मार्शल आर्ट का प्रदर्शन जैसे विशेष कार्यक्रम शामिल है। इस उत्सव के जरिये जिला, नगरीय निकायों एवं ग्राम पंचायत स्तर पर बेटियों के सम्मान और सशक्तिकरण का संदेश जन-जन तक पहुंचाया जाएगा। कार्यक्रम में उत्कृष्ट उपलब्धि प्राप्त करने वाली बालिकाओं तथा लाड़ली लक्ष्मी फ्रेंडली पंचायतों का सम्मान किया जाएगा। इसके अतिरिक्त एक पेड़ लाड़ली लक्ष्मी के नाम अभियान में जन-प्रतिनिधियों और बालिकाओं द्वारा पौध-रोपण भी किया जाएगा। साथ ही लाड़ली बालिकाओं को आश्वासन प्रमाण-पत्र वितरित किये जायेंगे। कार्यक्रम में लाड़ली क्लब की सदस्य बालिकाएं अपने अनुभव भी साझा करेंगी।

सुनहरे कल के लिये पानी बचाएं

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में जल गंगा संवर्धन अभियान में स्वयं सेवी कार्यकर्ता और प्रशासनिक अमला संगठित होकर पानी बचाने के कार्य में अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने का प्रयास कर रहे है। राज्य के जिलों में इसके बेहतर परिणाम सामने आ रहे है।

अभियान में प्राचीन धरोहर के तालाबों और बावड़ियों के संरक्षण का कार्य पूरे उत्साह के साथ किया जा रहा है।

रीवा जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत इटौरा में भेड़ौरा नदी तथा उसके घाटों की साफ-सफाई की गई। सीईओ जिला पंचायत तथा उपस्थित श्रमदानी नागरिकों ने नदी में उतर कर घाटों की सफाई की। जन संवाद में बताया गया कि जल के सभी स्त्रोत जीवन सभ्यता के लिए अनिवार्य है। इनका संरक्षण करना समाज की जिम्मेदारी है। अभियान में नदियों, तालाबों, बावड़ियों, पोखरों व अन्य जल संरचनाओं का संरक्षण व संवर्धन किया जा रहा है। राजगढ़ जिले की राजमहल एवं पुरानी बावड़ी अपने समृद्ध इतिहास को बयां करती हैं। जल संवर्धन अभियान अंतर्गत जिला प्रशासन द्वारा इन ऐतिहासिक बावड़ियों की साफ-सफाई कर इनके जीर्णोद्धार का कार्य हाथ में लिया गया है। जीर्णोद्धार के बाद ये बावड़ियां अपने समृद्ध इतिहास की जीवंत तस्वीर बन सकेंगी। जीर्णोद्धार का कार्य किया जा रहा है। राज्य पुरातत्व विभाग से सूचीकृत मोरपीपली की बावड़ी, माचलपुर की चोर बावड़ी, हाडीरानी की बावड़ी एवं सेमली जागीर की बावड़ी इसके अलावा नरसिंहगढ स्थित उम्मेदा बाई की बावड़ी एवं छतरी सहित राजगढ़ के राजमहल स्थित बावडी के जीर्णोद्धार का कार्य भी किया जा रहा है। कलेक्टर डॉ. गिरीश कुमार मिश्रा के मार्गदर्शन में जिले के नगरीय क्षेत्रों में जल संवर्धन अभियान अंतर्गत प्याऊ की स्थापना भी की जा रही है। इसमें प्रत्येक नगरीय क्षेत्र के हर वार्ड में एवं सार्वजनिक स्थानों पर 300 प्याऊ स्थापित करने का कार्यक्रम है।

सूखे कुएं में उतरने से कई तरह की हो सकती हैं दुर्घटनाएं

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने सूखे कुएं में उतरने से हो रही कई तरह की दुर्घटनाएं के संबंध में एडवाइजरी जारी की है। जहरीली गैसों के संपर्क में आना= हाइड्रोजन सल्फाइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, मीथेन, कार्बन डाइऑक्साइड जैसी खतरनाक गैसों की उपस्थिति बेहोशी, घुटन और मृत्यु का कारण बन सकती है। ऑक्सीजन की कमी= सीमित स्थान में ऑक्सीजन का स्तर कम होने से सांस लेने में तकलीफ और बेहोशी हो सकती है। बचाव की स्थिति (बचाव के लिए उठाए जाने वाले कदम)= कुएँ में उतरने के पहले लालटेन रस्सी से नीचे डालें यदी लालटेन बुझजाती है तो वहाँ पर ऑक्सीजन की कमी है और वहां ज़हरीली गैसहैं, अतः कुएँ के अंदर ना उतरे यदि कोई व्यक्ति सूखे कुएं में दुर्घटना का शिकार हो जाता है, तो बचाव की स्थिति में कदम उठाए जाने चाहिए। अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करें= बिना उचित प्रशिक्षण और सुरक्षा उपकरणों के कुएं में उतरने का प्रयास न करें। इससे आप भी खतरे में पड़ सकते हैं। तत्काल मदद के लिए कॉल करें= तुरंत आपातकालीन सेवाओं (जैसे पुलिस, अग्निशमन दल, बचाव दल) को सूचित करें। उन्हें दुर्घटना का स्थान और स्थिति की जानकारी दें। क्षेत्र को सुरक्षित करें= कुएं के आसपास के क्षेत्र को खाली कराएं ताकि अन्य लोग खतरे में न पड़ें। स्थिति का आकलन करें= यदि संभव हो, तो दूर से या सुरक्षित दूरी से दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति की स्थिति का आकलन करें (चेतना, सांस लेना, चोटें)। बचाव योजना बनाएं= आपातकालीन सेवाओं के पहुंचने पर, उनके साथ मिलकर एक सुरक्षित और प्रभावी बचाव योजना तैयार करें। प्रशिक्षित बचाव दल= बचाव कार्य केवल प्रशिक्षित और उचित उपकरणों से लैस बचाव दल द्वारा ही किया जाना चाहिए। सुरक्षा उपकरण= बचाव दल को उचित व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई), श्वास सुरक्षा उपकरण, हार्नेस, रस्सियां और अन्य आवश्यक उपकरणों का उपयोग करना चाहिए।

पति के साथ भाजपा दफ्तर पहुंचीं सागर महापौर, नोटिस का दिया जवाब

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। अनुशासनहीनता के मामले में भाजपा की ओर से पार्टी नेताओं पर कार्रवाई जारी है। प्रदेश नेतृत्व ने स्पष्ट किया है कि अनुशासनहीनता, सरकार या मंत्रियों पर बेतुकी बयानबाजी, और संगठन की सहमति के बिना निर्णय लेना बर्दाश्त नहीं होगा। शनिवार को दो विधायकों को तलब किए जाने के बाद रविवार को सागर महापौर संगीता तिवारी भी संगठन को अपनी सफाई देने पहुंचीं।

प्रदेश संगठन की अनुमति के बिना मेयर इन काउंसिल में बदलाव पर महापौर संगीता तिवारी ने लिखित माफी मांगी है और भविष्य में ऐसी गलती न करने की बात कही है। तिवारी ने जवाब में कहा कि उन्हें यह जानकारी नहीं थी कि एमआईसी में बदलाव के लिए प्रदेश नेतृत्व की अनुमति जरूरी है। इसलिए अनजाने में यह निर्णय लिया।

मेयर इन काउंसिल में बदलाव का फैसला काउंसिल के अन्य सदस्यों से चर्चा के बाद लिया था। बदली गई सदस्य आशारानी जैन बुजुर्ग और बीमार होने के कारण लगातार एमआईसी के निरीक्षणों में नहीं आ रही थीं, इसलिए उनके स्थान पर परिषद के सचेतक और जनसंघ से जुड़े वरिष्ठ पार्षद शैलेंद्र ठाकुर को एमआईसी में शामिल किया गया है।

कलेक्टर ने सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण की समीक्षा की

50 दिन से लंबित सभी आवेदनों का निराकरण करने के निर्देश

शिविर लगाकर तय समय सीमा में ई केवाईसी अपडेट कराएं

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आयोजित बैठक में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण की समीक्षा की। कलेक्टर ने कहा कि सीएम हेल्पलाइन में 50 दिन से अधिक समय से लंबित आवेदनों का सात दिवस में निराकरण करें। समाधान ऑनलाइन के एजेण्डा बिन्दुओं में लंबित सीएम हेल्पलाइन प्रकरण तथा सीएम डैशबोर्ड में शामिल बिन्दुओं पर भी तत्परता से कार्यवाही कर ऑनलाइन प्रतिवेदन दर्ज कराएं। खाद्य विभाग, स्वास्थ्य विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, श्रम विभाग, राजस्व विभाग, ग्रामीण विकास विभाग, नगर निगम, नगरीय निकाय तथा लोक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में बड़ी संख्या में आवेदन पत्र लंबित हैं। इनका प्राथमिकता से निराकरण करें। सभी अधिकारी स्वयं आवेदनों पर कार्यवाही सुनिश्चित करें।

कलेक्टर ने कहा कि मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी शेष बचे हितग्राहियों के आयुष्मान कार्ड बनाने के लिए मिशन मोड में कार्य करें। इसके लिए पंचायतों में शिविर लगाएं। इसमें लापरवाही बरतने वाले बीएमओ तथा आशा कार्यकर्ता के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही करें। सभी शासकीय अस्पतालों तथा निजी अस्पतालों में होने वाले प्रसव की जानकारी शत-प्रतिशत ऑनलाइन दर्ज कराएं। कार्यपालन यंत्री पीएचई एकल नलजल योजनाओं का कार्य पूरा कराकर उन्हें ग्राम पंचायतों को हैण्डओवर कराएं। कंदैला समूह नलजल योजना तथा एकल नलजल योजनाओं में नल कनेक्शन के कार्य में तेजी लाएं। नलजल योजनाओं और हैण्डपंपों पर सतत निगरानी रखकर हर बसाहट में पेयजल की आपूर्ति करें। हैण्डपंप खराब होने की सूचना मिलने पर उसे 24 घंटे की समय सीमा में सुधारें।

कलेक्टर ने कहा कि जिला शिक्षा अधिकारी छात्रवृत्ति के शेष आवेदन में दो दिवस में निराकृत करें। कक्षा एक से 12 तक में विद्यार्थियों का लक्ष्य के अनुसार शत-प्रतिशत शाला प्रवेश कराएं। शाला जाने योग्य कोई भी बच्चा शाला जाने से वंचित न रहे। उप संचालक पशुपालन किसान क्रेडिट कार्ड बनाने तथा सीएम डैशबोर्ड के अन्य बिन्दुओं पर तत्काल कार्यवाही करें। जिले भर में समर्थन मूल्य पर गेंहू का उपार्जन किसानों से किया जा रहा है। उपार्जित गेंहू का तत्काल परिवहन कराकर सुरक्षित भण्डारण कराएं। किसानों को तीन दिन की समय सीमा में भुगतान देना सुनिश्चित करें। जिला प्रबंधक नागरिक आपूर्ति निगम खरीदी केन्द्रों में बारदाने की उपलब्धता तथा गेंहू के परिवहन की समुचित व्यवस्था करें।

कलेक्टर ने कहा कि समग्र पोर्टल तथा खाद्य सुरक्षा योजना के हितग्राहियों की ई केवाईसी योजना के पोर्टल में तय समय सीमा में कराएं। इसके लिए ग्राम पंचायतों तथा नगरीय क्षेत्र के वार्डों में शिविर लगाएं। हर विकासखण्ड में कम से कम पाँच हजार व्यक्तियों का ई केवाईसी प्रतिदिन कराएं। तभी तय समय सीमा में कार्य पूरा होगा। सभी सीएमओ भी वार्डों में शिविर लगाकर लक्ष्य के अनुसार ई केवाईसी कराएं। जिन परिवारों में सदस्य संख्या में पाँच से अधिक है उनका ई केवाईसी सबसे पहले कराएं। खाद्य सुरक्षा योजना में ई केवाईसी कराने के साथ पात्र हितग्राहियों का सत्यापन भी हो रहा है। सत्यापन के समय मृतक तथा स्थाई रूप से पलायन करने वाले परिवारों एवं विषमता परिवार के सदस्यों को पोर्टल से पृथक करने की कार्यवाही करें।

कलेक्टर ने कहा कि न्यायालय में लंबित प्रकरणों का जवाबदावा समय पर दायर करें। अवमानना के प्रकरणों में न्यायालय द्वारा दिए गए निर्देशों का तत्काल पालन करते हुए प्रतिवेदन न्यायालय में प्रस्तुत करें। कलेक्टर ने शिक्षा विभाग में बड़ी संख्या में न्यायालयीन प्रकरण दर्ज होने पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि जिला शिक्षा अधिकारी शिक्षकों तथा अन्य कर्मचारियों के स्वत्वों का समय पर भुगतान सुनिश्चित करें। अपर कलेक्टर तथा जिला कोषालय अधिकारी शिक्षा विभाग के सभी अधिकारियों तथा स्थापना एवं लेखा प्रभारियों की बैठक? करके बिलों के संबंध में उचित प्रशिक्षण दें। इसके बाद भी यदि कार्य में प्रगति नहीं होती है तो संबंधित के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही करें। कलेक्टर ने कहा कि ई आफिस प्रणाली के माध्यम से ही अब फाइलों का निपटारा हो रहा है। अधिकारी ई आफिस प्रणाली से ही फाइलों का मूवमेंट करें।

बैठक में कलेक्टर ने अधिकारियों को जल गंगा संवर्धन अभियान, पेयजल व्यवस्था, निर्माण कार्यों की निगरानी तथा गेंहू उपार्जन के संबंध में निर्देश दिए। बैठक में आयुक्त नगर निगम डॉ सौरभ सोनवड़े, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी मेहताब सिंह गुर्जर, अपर कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी, संयुक्त कलेक्टर पीके पाण्डेय, संयुक्त कलेक्टर श्रेयस गोखले, सभी एसडीएम जनपद के सीईओ तथा सभी सीएमओ और अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

रोहित, करण और जयप्रकाश ने किया स्वेच्छा से रक्तदान

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सिन्धु विकास समिति द्वारा लगातार चलाए जा रहे रक्तदान अभियान में जुड़कर निरंतर युवा रक्तदान कर रहे हैं उसी कड़ी में 26 अप्रैल को जिला अस्पताल में भर्ती जरूरतमंदों को रोहित आवतवानी, करण गुरबक्शानी,एवं जयप्रकाश शामनानी ने रक्त की सेवा देकर मानव धर्म निभाया।

समिति संस्थाध्यक्ष विनोद गेलानी के कुशल मार्गदर्शन में पिछले कई वर्षों से रक्तदान जीवनदान की अलख ज्योति जलाकर इंसानियत का धर्म निभाते हुए मानवता की सेवा कर रही है एवं अभी तक 6580 यूनिट रक्तदान एवं 35 यूनिट प्लेटलेट्स करवाने का एक रिकॉर्ड भी कायम किया है।रक्तदान करवाने मे मनीष सदानी विक्की गेलानी व संजय आहूजा जी,का उल्लेखनीय योगदान रहा। रक्तवीरों के रक्तदान करने पर संस्था के संरक्षक श्री गोपी गेलानी श्रीचंद मनवानी मनोहर डिगवानी अध्यक्ष विनोद गेलानी ज्ञान खटवानी श्रीचंद शीतलानी घनश्याम मंघरानी संजय वाधवानी महेश रावलानी गंगाराम सचदेव दिलीप सोनी अमित कामरानी रंजीत सेनानी जितेंद्र गावरी गोपीचंद कापड़ी विजय जग्यासी अशोक चांदवानी बसंत खत्री दीपक वाधवानी केशव मखीजा राजेश कोटवानी राजकुमार साधवानी मनीष टेकवानी पंकज आहूजा मनीष सदानी अमित घोघवानी सहयोगी आकाश बनर्जी मनमोहन माहेश्वरी विभाग बनर्जी आशीष मोगिया बसंत शर्मा निक्की मनचंदानी विशाल राजपाल संजय आहूजा बंसी नागदेव महिला मंडल से मोना चोपड़ा राखी होतचंदानी डॉ. मनीषा सोई डॉक्टर विद्या पांडे, कशिश नागदेव सिमरन होतचंदानी निशा गोयल आभा सिंह रशिम जैन प्रेरणा जादवानी अनामिका सोनी ने रक्तवीरों को बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की है।

एक मई को करेंगी जल गंगा संवर्धन अभियान की समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले भर में 30 मार्च से जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल एक मई को जल गंगा संवर्धन अभियान की समीक्षा करेंगी। बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में सुबह 11 बजे आरंभ होगी। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जनपद के मुख्य कार्यपालन अधिकारी तथा मुख्य नगर पालिका अधिकारियों एवं संबंधित विभाग के अधिकारियों को अद्यतन जानकारी के साथ बैठक में उपस्थित रहने के निर्देश दिए गए हैं।

कलेक्टर तैयारियों की आज करेंगी समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव का जिले के जवा में चार मई को दौरा कार्यक्रम प्रस्तावित है। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल 29 अप्रैल को शाम 4.30 बजे से कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित बैठक में मुख्यमंत्री जी के प्रस्तावित दौरे के तैयारियों की समीक्षा करेंगी। अपर कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी ने सभी संबंधित अधिकारियों को बैठक में उपस्थित रहने के निर्देश दिए हैं।

समाधान आनलाइन कार्यक्रम दो मई को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव दो मई को शाम चार बजे से वीडियो कान्फ्रेंसिंग से आयोजित समाधान आनलाइन कार्यक्रम में निर्धारित एजेण्डा बिन्दुओं की समीक्षा करेंगे। बैठक में समाधान आनलाइन के एजेण्डा बिन्दुओं में लंबित सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण की समीक्षा की जाएगी। बैठक में पीएमश्री एयर एंबुलेंस सेवा तथा निवेश संवर्धन केन्द्र की भी समीक्षा की जाएगी। सभी संबंधित अधिकारियों को कमिश्नर कार्यालय और कलेक्टर कार्यालय के एनआईसी केन्द्र से वीडियो कान्फ्रेंसिंग में उपस्थित रहने का अनुरोध किया गया है।

मऊगंज में प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना संबंधी बैठक आज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज में प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना संबंधी बैठक 29 अप्रैल को दोपहर एक बजे से कलेक्ट्रेट कार्यालय में मऊगंज में आयोजित की जा रही है। बैठक की अध्यक्षता कलेक्टर मऊगंज संजय कुमार जैन करेंगे। बैठक में आदर्श ग्राम योजना के तहत वर्ष 2021-22 एवं वर्ष 2022-23 में संबंधित ग्राम पंचायतों को आवंटित राशि के उपयोग तथा निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा की जाएगी। जिला संयोजक आदिमजाति कल्याण विभाग कमलेश्वर सिंह ने संबंधित जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों से राशि उपयोगिता प्रमाण पत्र तथा कार्य पूर्णता प्रमाण पत्र के साथ बैठक में उपस्थित रहें।

जिले में 951831 हितग्राहियों का ई केवाईसी हुआ अपडेट

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। खाद्य सुरक्षा योजना से लाभान्वित सभी हितग्राहियों के ई केवाईसी अपडेशन का कार्य लगातार किया जा रहा है। इस संबंध में जिला आपूर्ति अधिकारी कमलेश तांडेकर ने बताया कि जिले में खाद्य सुरक्षा योजना से लाभान्वित परिवारों के 12 लाख 59 हजार 816 सदस्य राशन मित्र पोर्टल पर दर्ज हैं। इन सभी सदस्यों का ई केवाईसी दर्ज कराने तथा मृतक एवं स्थाई रूप से पलायन कर गए व्यक्तियों के नाम पृथक करने की कार्यवाही लगातार की जा रही है। इसके लिए उचित मूल्य दुकान के सेल्समैन पीओएस मशीन के माध्यम से हितग्राहियों का ई केवाईसी अपडेट कर रहे हैं। ग्राम पंचायत सचिव, रोजगार सहायक और नगरीय क्षेत्रों में वार्ड प्रभारी भी ई केवाईसी अपडेट कर रहे हैं। एप के माध्यम से हितग्राही को स्वयं ई केवाईसी दर्ज कराने की भी सुविधा दी गई है। इसके अलावा कॉमन सर्विस सेंटर में भी ई केवाईसी अपडेशन की सुविधा उपलब्ध है।

जिला आपूर्ति अधिकारी ने बताया कि अब तक जिले में 9 लाख 51 हजार 831 हितग्राहियों की ई केवाईसी की जा चुकी है। जिसमें जनपद पंचायत गंगेव में 123446, जवा में 114452, रायपुर कर्चुलियान में 153387, रीवा में 152932, सिरमौर में 164493, त्योंथर में 112385 हितग्राहियों की ई केवाईसी अपडेट की जा चुकी है। नगरीय निकायों में नगर निगम रीवा में 61483, नगर परिषद डभौरा में 12550, बैकुण्ठपुर में 5718, चाकघाट में 5720, गोविंदगढ़ में 7005, गुढ़ में 8341, मनगवां में 6961, सेमरिया में 8356, नगर परिषद सिरमौर में 5507 तथा नगर परिषद त्योंथर में 9095 हितग्राहियों की ई केवाईसी अपडेट की जा चुकी है। जिले में 21 अप्रैल से 27 अप्रैल तक 22773 ई केवाईसी अपडेशन किया गया।

विधायक, कलेक्टर और एसपी ने लिया मुख्यमंत्री के दौरे की तैयारियों का जायजा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव का रीवा जिले के जवा तहसील में ग्राम दिव्यगवां में दौरा कार्यक्रम 4 मई को प्रस्तावित है। मुख्यमंत्री डॉ यादव शासकीय महाविद्यालय के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण करेंगे तथा विशाल आमसभा को संबोधित करेंगे। विधायक सिरमौर श्री दिव्यराज सिंह, कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल तथा पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह ने कार्यक्रम स्थल, हेलीपैड तथा महाविद्यालय भवन का निरीक्षण किया एवं तैयारियों का जायजा लिया। कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि मुख्यमंत्री जी की सभा में शामिल होने के लिए बड़ी संख्या में आमजन पहुंचेंगे। इनके बैठने तथा पेयजल के लिए समुचित व्यवस्था करें। हेलीपैड स्थल और कार्यक्रम स्थल पर सुरक्षा के समुचित प्रबंध करें। वाहनों की पार्किंग सुव्यवस्थित कराएं। कार्यक्रम स्थल पर प्राथमिक उपचार दल तैनात रखें। आमजनता के बैठने की सेक्टरवार व्यवस्था करें। प्रत्येक सेक्टर में पेयजल व्यवस्था तथा सुरक्षा के लिए अधिकारी तैनात रहें। मुख्य मंच में केवल सूची में शामिल लोगों को ही प्रवेश दें। कलेक्टर ने अधिकारियों को मंच व्यवस्था, साउंड सिस्टम तथा अन्य व्यवस्थाओं के संबंध में निर्देश दिए। इस अवसर पर जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी मेहताब सिंह गुर्जर, अपर कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विवेक लाल, एसडीओपी उदित मिश्रा, एसडीएम पीयूष भट्ट तथा अन्य प्रशासनिक और पुलिस अधिकारी उपस्थित रहे।

एयरपोर्ट के विस्तारीकरण के लिए बनेगा मास्टर प्लान

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना एयरपोर्ट की लम्बाई 1200 मीटर से 1800 मीटर करने और एयरपोर्ट विस्तारीकरण के लिए मास्टर प्लान तैयार किया जा रहा है। इस दौरान एयरपोर्ट के विस्तारीकरण में आने वाली बाधाओं को चिन्हित कर संबंधित विभागों से अपेक्षायें बताई जायेगी। इस आशय का निर्णय कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एस की अध्यक्षता में संपन्न एयरपोर्ट अथारिटी और जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ सोमवार को संपन्न बैठक में लिया गया। इस मौके पर एयरपोर्ट अथारिटी के अधिकारी एटीसी रजनी खातरकर, भरत गोयल, लैण्ड कन्सल्टेन्ट एयरपोर्ट केपी पाण्डेय, एसडीएम राहुल सिलाडिया, तहसीलदार सौरभ मिश्रा, अधीक्षण यंत्री विद्युत पीके मिश्रा, जिला संयोजक आदिम जाति कमलेश्वर सिंह, जिला शिक्षा अधिकारी टीपी सिंह, कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण बीआर सिंह भी उपस्थित थे।

एयरपोर्ट विस्तारीकरण की चिन्हित बाधाओं की जानकारी में एटीसी रजनी खातरकर ने बताया कि इनमें एचटी लाइन, एलटी लाइन, स्कूल एवं हास्टल बिल्डिंग, आवासीय भवनों और वृक्षों को चिन्हित किया गया है। एसडीएम राहुल सिलाडिया ने बताया कि एयरपोर्ट विस्तारीकरण की बाधाओं को गूगल मैप पर चिन्हित कर लिया गया है। कलेक्टर ने कहा कि सतना एयरपोर्ट विस्तारीकरण का मास्टर प्लान तैयार होने के बाद संबंधित विभागों से अपेक्षाओं के अनुरूप कार्यवाही संपादित की जायेगी।

एडीआर भवन में विधिक सह जागरूकता शिविर आयोजित

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण एवं प्रधान जिला न्यायाधीश/अध्यक्ष रत्नेश चन्द्र सिंह के मार्गदर्शन में सोमवार को एडीआर भवन में महात्मा गांधी कॉलेज ऑफ लॉ के विधि छात्र-छात्राओं के साथ विधिक साक्षरता सह जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण पार्थ शंकर मिश्र द्वारा उपस्थित छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि नशा एक गंभीर बीमारी है, नशे से आप स्वयं के शारीरिक, आर्थिक एवं पारिवारिक कलह का भार तो उठाते ही है। साथ ही समाज व देश को कमजोर करने का नैतिक अपराध करते है।

राज्यमंत्री ने अग्नि दुर्घटना से पीड़ितों से की भेंट

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने रैगांव विधानसभा क्षेत्र के ग्राम चंदनगढ (कूंची) में पराली से घरों में आग लगने की दुर्घटना स्थल का मौका मुआयना किया। रविवार को अपने क्षेत्र भ्रमण के दौरान राज्यमंत्री सोहावल विकासखण्ड के ग्राम पंचायत पडरौत के चंदनगढ पहुंची। वहां उन्होंने अग्नि दुर्घटना से पीडित जनों से मिलकर उन्हें ढाढस बंधाया। प्रभावितों को त्वरित राहत सुनिश्चित करने एसडीएम रघुराजनगर ग्रामीण एलआर जांगडे को 15 दिवस के भीतर घटना से प्रभावित संपतियों का विस्तृत आंकलन रिपोर्ट तैयार कर आरबीसी 6-4 के प्रावधानों के अनुसार राहत सहायता राशि वितरण करने के निर्देश दिये।

परीक्षा पूर्व नि :शुल्क प्रशिक्षण के लिए आवेदन 15 मई तक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मध्यप्रदेश अनुसूचित जाति कल्याण द्वारा संचालित परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केन्द्र में बैंकिंग, रेलवे, एसएससी, बीमा, नर्सिंग एवं म.प्र. कर्मचारी चयन मण्डल में चयन के लिये अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के अभ्यर्थियों से आगामी 15 मई तक आवेदन आमंत्रित किये गये हैं। इस संबंध में प्राचार्य परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केन्द्र ने बताया कि आवेदन पत्र स्वयं अथवा रजिस्टर्ड डाक से कार्यालय में जमा किये जा सकते हैं। आवेदक मध्यप्रदेश का मूल निवासी तथा अनुसूचित जाति अथवा जनजातीय का सदस्य होना चाहिए। आवेदक की आयु 18 से 35 वर्ष के बीच हो। आवेदक के परिवार की वार्षिक आय 6 लाख रूपये से अधिक नहीं होनी चाहिए। आवेदक को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तय की गयी न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता रखता हो। प्रशिक्षण के लिए चयनित होने पर प्रशिणार्थी को 500 रूपये सुरक्षानिधि जमा करके अनुबंध के अनुसार प्रशिक्षण में प्रवेश दिया जायेगा। इस संबंध में विस्तृत जानकारी परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केन्द्र शा. ज्ञानोदय विद्यालय अनुसूचित जाति कल्याण विभाग परिसर से प्राप्त की जा सकती है। जानकारी प्राप्त करने के लिए फोन नंबर 07662-299221 पर भी संपर्क किया जा सकता है।

25 लाख पौधों के वृक्षारोपण की कार्य योजना बनाये-कलेक्टर

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एस ने कहा कि आगामी बरसात में जिले में 25 लाख पौधों के वृक्षारोपण का लक्ष्य तय किया गया है। सभी नगरीय निकाय और जनपद पंचायतें, शासकीय विभाग अपने क्षेत्रान्तर्गत अधिक से अधिक पौधा रोपण किये जाने की कार्य योजना तैयार करें। इस आशय के निर्देश कलेक्टर ने सोमवार को संपन्न समय-सीमा प्रकरणों की बैठक में दिये। इस मौके पर सीईओ जिला पंचायत संजना जैन, आयुक्त नगर निगम शेर सिंह मीना, नवागत सहायक कलेक्टर अनिकेत शांडिल्य, एसडीएम राहुल सिलाडिया, जितेन्द्र वर्मा, एलआर जांगडे, आरएन खरे, अधीक्षण यंत्री विद्युत पीके मिश्रा सहित जिला विभाग प्रमुख अधिकारी, जनपद के सीईओ, नगरीय निकायों के सीएमओ भी उपस्थित रहे।

समय-सीमा प्रकरणों की बैठक में कलेक्टर ने विभिन्न विभागों के समन्वय के विषयों पर चर्चा की। उन्होंने रेल्वे, जल निगम, एनवीडीए की नहरों, नगर निगम के कार्य, पेयजल की स्थिति की जानकारी लेकर समीक्षा की। कलेक्टर ने कहा रबी की फसल के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में 3 माह खेत खाली रहेंगे। इस अवधि में जल निगम कार्य की गति बढाये और तेजी से कार्य पूरा करें। उन्होंने सतना नगर के आईएसबीटी के कार्य की समीक्षा में कहा कि बस टर्मिनल का शेष कार्य पूरा कर नगर निगम को हैण्ड ओव्हर करें। नगर निगम सहित नागौद, उचेहरा, रामपुर बघेलान, बिरसिंहपुर, कोठी नगर पंचायत में 5 लाख रूपये प्रत्येक की लागत से बनने वाले फिश पार्लर के लिए स्थान का चिन्हांकन कर शीघ्र कार्य शुरू करने के निर्देश दिये। उन्होंने एसडीएम को कहा कि उनके क्षेत्र में एनवीडीए नहर और जल निगम के कार्यों की निरंतर मानीटर करें। पेयजल की स्थिति और जल गंगा संवर्धन अभियान के कार्यों की समीक्षा में कलेक्टर ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में असफल बोर में सुरक्षित रूप से शोक पिट की संरचना तैयार कर उसे जल पुर्नभरण की संरचना के रूप में उपयोग किया जा सकता है। पिछले 5 वर्षों में असफल बोर की सूची भी विभाग को प्रस्तुत करने के निर्देश दिये। सीएम डैश बोर्ड की समीक्षा में कलेक्टर ने कहा कि समाधान कार्यर म के विषयों सहित सीमांकन और बंटवारा के प्रकरणों पर फोकस करें। सीएम हेल्पलाइन की समीक्षा में कलेक्टर ने कहा कि 100 दिन और 300 दिन से ऊपर की शिकायतों पर विशेष रूप से फोकस करें। अगले सप्ताह की टीएल में इनकी समीक्षा की जायेगी।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली की समीक्षा में बताया गया कि अप्रैल माह का 80 प्रतिशत खाद्यान्न वितरण किया जा चुका है। मझगवां विकासखण्ड में सबसे ज्यादा ई-केवायसी लंबित है। कलेक्टर ने सभी एसडीएम को गुरूवार के दिन ए.एस.ओ. जे.एस.ओ. के साथ बैठक कर खाद्यान्न वितरण और ई-केवायसी की समीक्षा करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि पीडीएस की जिम्मेदारी एसडीएम की है। खाद्यान्न वितरण की अनियमितताओं पर कार्यवाही करें और पेनाल्टी लगायें।

उपार्जन की समीक्षा में कलेक्टर ने कहा कि केन्द्रों में आ रही वारदानों की कमी की समस्या आज मिल रही 800 गठानों से दूर होगी। उपार्जन केन्द्रों में 3 लाख क्विंटल गेहूं परिवहन के लिए शेष दिख रहा है। सबसे ज्यादा 29 हजार क्विंटल गेहूं नागौद में है। केन्द्र में बोरों की स्टेकिंग और तिरपाल से असमय बरसात में सुरक्षित रूप से रखे। उन्होंने जिला प्रबंधक नागरिक आपूर्ति निगम को परिवहन में लापरवाही पर नोटिस जारी करने के निर्देश दिये।

पीड़ित परिवारों की पीड़ा अंतहीन

पहलगांव की घटना वीभत्स और करुणा भरी है, कश्मीर से कन्याकुमारी तक दुख विषाद आक्रोश है। क्योंकि पहलगांव घूमने गए लोग अपनी-अपनी खुशियों में जिंदगी के जश्न मनाते, अचानक मौत को गले लगा लिए। जिन आंखों ने बाईस अप्रैल दो हजार पच्चीस को इस मार्मिक दृश्य को देखा है, वह गंभीर स्थिति से गुजर रहा होगा। आज कश्मीर घाटी अथाह ग़म का सागर बन गई, पहलगांव लहूलुहान है। कौन सोचा रहा होगा कि जिंदगी का जश्न मौत में बदल जाएगा। किसी फिल्मी कहानी की तरह हुई इस यथार्थ घटना पर गंभीर चिंतन करना हर भारतीय के लिए जरूरी है। आतंकियों को चाहे कोई सजा दें, इन पीड़ित परिवारों की पीड़ा अंतहीन है। कोई नवदुल्हन विधवा हुई है तो, किसी का बच्चा अनाथ हुआ, जिसके सिर से पिता का साया उठ गया, हिन्दू है कहते गोलियां बरसी। कोई जन्म दिन मनाते हुए मार दिया गया, कोई पिता के गले से लिपटा हुआ मार दिया गया। किसी की शादी की वर्षगांठ, मृत्यु का क.फ़न दे गई। इस घटना से सचमुच ही जल - थल - नभ रो पड़ा बेगुनाह मौतों को देखकर।

धर्म पूछकर मौत देना क्या यही इस्लाम धर्मः *हिंदुओं के नाम पूछकर मौत देना यदि इस्लाम का धर्म है, तो इंसाफ के लिए आतंकी का नाम पूछकर बड़ी से बड़ी सजा देना भारत का लोकतांत्रिक धर्म है। हम सब सजग रहें सतर्क रहें। बरसों पुराने सिंधु नदी जल समझौते पर रोक भारत सरकार का बड़ा निर्णय है। आतंकी आकाओं को बिना पानी पिलाए मारने का यह तरीका देशहित फैसला और बड़ी कार्यवाही है। अब जरूरी हो गया है हर घर में सैन्य शक्ति होनी चाहिए। एक मुट्ठी लोग हम अरबों पर आतंकी हमला करते वक्त, धर्म पूछकर हमारे हिंदुओं को मारे हैं। आज जरूरत है धर्म जगे और जगाए ओंकार का नाद हो तांडव में हुंकार भरे। खून और पानी एक साथ नहीं बहे अब खून में हिंदुत्व की ज्वाला बहे। जिससे अराजक तत्वों को जो समाज में अव्यवस्था और धार्मिक उन्माद पैदा कर रहे हैं उनका निर्मूलन हो सके तभी भारतीय संस्कृति बच पाएगी हम बच पाएंगे। हर कोई सरहद पर बंदूक लेकर खड़ा हो यह जरूरी नहीं, हमें सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक रूप से भी लड़ना होगा और दुश्मन को धनहीन करना होगा, उसको असहयोग करना होगा।*

राजगुरु मनोज अग्निहोत्री

विचार

हमारी भाषाई विविधता हमारी शक्ति है

भारत हजारों वर्ष पूर्व से अपनी अनमोल विशेषताओं का धनी रहा है। भारत में अनमोल विशाल प्राकृतिक संपदा, अनमोल संस्कृति, साहित्य, ज्ञान, भाषाई विविधता का ख़जाना भरा है। यह देखकर ऐसा महसूस होता है कि सारी सृष्टि में मां सरस्वती ने भारत पर अनमोल कृपा बरसाई है, क्योंकि ऐसा बेजोड़ खजाना शायद ही वैश्विक रूप से किसी देश में होगा ऐसा मेरा मानना है।

साथियों बात अगर हम इस अनमोल ख़ज़ाने की करें तो हम सब 135 करोड़ जनसंख्याकिय तंत्र को गंभीरता से रेखांकित कर इसका लाभ उठाना होगा क्योंकि यह हमारी अनमोल धरोहर और शक्ति भी है तथा आत्मनिर्भर भारत बनाने की अनमोल कड़ियों में से यह भी एक है जिसके आधार पर हमें आत्मनिर्भर भारत में अनमोल सहयोग व ताकत प्राप्त होगी।

साथियों बात अगर हम हमारी भाषाई विविधता की करें तो हर भारतीय भाषा का गौरवशाली अनमोल इतिहास, समृद्धि, साहित्य भाषा योग्यता है जो हमारी शक्ति है और अनेकता में एकता की भाषा की मिठास से वैश्विक स्तरपर भारतीय साहित्य के साथ-साथ भारत की प्रतिष्ठा भी बड़ी है।

साथियों बात अगर हम उपरोक्त भाषाई ख़ज़ाने को रेखांकित करने के महत्व की करें तो भारतीय बौद्धिक क्षमता विश्व प्रसिद्ध है और 135 करोड़ जनसंख्यकीय तंत्र में हर व्यक्ति के पास अपने ढंग की एक विशेष कला है जो उसे उनके भाषाई इतिहास,साहित्य, पूर्वजों से मिली है जिसका उपयोग करने के लिए उनके पास उचित और पर्याप्त प्लेटफार्म नहीं है और अगर है भी तो सभी के लिए नहीं है कुछ ही लोगों के लिए है जिसे हमें रेखांकित कर उनके लिए अपना कौशल दिखाने विश्वविद्यालय स्तरपर ग्रामीण क्षेत्रों में भाषाई विविधता के कड़ियों को जोड़ने एक अभियान चलाना होगा और उस कौशल को बाहर निकालकर हमें तराशना होगा और आत्मनिर्भर भारत में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा।

साथियों बात अगर हम भाषाई विविधता को एक माला में पिरोने की करें तो इसमें राजभाषा हिंदी को एक सखी के रूप में प्रयोग करना होगा और हमारी भाषाई विविधता को हमारी शक्ति बनाना होगा।

साथियों बात अगर हम माननीय पूर्व उपराष्ट्रपति द्वारा एक कार्यक्रम में संबोधन की करें तो पीआईबी के अनुसार उन्होंने भी कहा कि हर भारतीय भाषा का गौरवशाली इतिहास है, समृद्ध साहित्य है, हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे देश में भाषाई विविधता है। हमारी भाषाई विविधता हमारी शक्ति है क्योंकि हमारी भाषाएं हमारी सांस्कृतिक एकता को अभिव्यक्त करती हैं । इस संदर्भ में उन्होंने युवा छात्रों से संप्रदाय, जन्म, क्षेत्र, लैंगिक विभेद, भाषा आदि भेदभावों से ऊपर उठकर देश की एकता को मजबूत करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि एक सभ्य समाज से यही अपेक्षित है कि उसकी भाषा सौम्य, सुसंस्कृत और सृजनशील हो। उन्होंने विश्वविद्यालयों से अपेक्षा की कि वे यह संस्कार डालें कि साहित्य लेखन से समाज में सभ्य संवाद समृद्ध हो, ना कि विवाद पैदा हो।

हिमाचल की सड़कों पर मौत का तांडव कब थमेगा?

हिमाचल में सड़क हादसों की लकीर नियति ने बहुत गहरी लिख दी है।सड़क हादसे अभिशाप बनते जा रहे है।2025के चार महिनों में हजारो लोग मौत के मुह में समा चुके है। हादसों को देखकर हालात ऐसे बन गए है कि अल सुबह घर से निकले लोग शाम को घर पहुंचेगे इसकी कोई गारंटी नहीं होती है। सड़क हादसों हर रोज घरों के चिराग बूझ रहे है।बच्चे अनाथ हो रहे है।मातओं व बहनों के सिदूंर मिट रहे है। यह सिलसिला अनवरत जारी है। हिमाचल में किन्नौर से लेकर भरमौर तक प्रतिदिन भीषण व दर्दनाक सड़क हादसे होते जा रहे है। एक बार फिर लाशों क़े ढेर लग गए लाशों क़ो ढ़ापने क़े लिए कफ़न कम पड़ गए द्य 25 अप्रैल 2025 को पंडोह में एक कार के खाई में गिर जाने से एक ही परिवार के पांच लोग मौत की नींद सो गए यह बहुत ही दर्दनाक हादसा हुआ है एक साथ पांच चितायें जलने से हर आँखों से आंसू बह रहे थे शादी का माहौल मातम में बदल गया यह बारात से लौट रहे थे द्य बीते साल 2024में भी बहुत दर्दनाक हादसे हुए थे यह हादसे बदस्तूर जारी हैं

आकडों के अनुसार 4 दिसंबर 2023 का काला दिन काल बनकर 11 लोगों क़ो लील गया था द्य तीन सड़क हादसों में कई घरों क़े चिराग़ बुझ गए थे द्य पहला हादसा शिमला जिला क़े सुन्नी में हुआ था जहाँ एक पिकअप गहरी खाई में गिर गई और छः लोगों की मौत हो गई थी मरने वालों में जम्मू कश्मीर क़े चार लोगों की मौत हो गई थी यह चारों एक ही गाँव क़े रहने वाले थे तथा एक हफ्ता पहले ही काम पऱ सुन्नी आये थे द्य दूसरा हादसा ददाहू संगड़ाह मार्ग पऱ एक टिपर खाई में गिर गया था और दो लोगों की मौत हो गई थी और दो लोग घायल हो गए थे द्य तीसरा हादसा मंडी जिले क़े गोहर क़े केलोधार में शादी समारोह में भाग लेकर जंजेहली लौट रहे तीन लोगों की कार खाई में गिर गई और तीनों की मौत हो गई थी और दो घायल हो गए थे इस हादसे में पति पत्नी की मौत हो गई द्य एक दिन में ग्यारह लोगों की मौत से लोग सदमे में है द्य 2 नवबंर 2023 क़ो करवा चौथ के दिन मंडी व बिलासपुर में दो सड़क हादसों में तीन महिलाओ समेत छह की मौत हो गई थी और आठ लोग घायल हो गए थे यह बहुत ही दर्दनाक हादसा हुआ था जो असमय ही इतनी जिंदगीयाँ लील गया था द्य करवा चौथ के दिन हुआ यह हादसा कभी नहीं भूलेगा द्य चारों तरफ चीखो पुकार मच गई थी पल भर में लोग चिथड़ों में बदल गए थे द्यभीषण सडक हादसे कब रुकेंगे यह एक यक्ष प्रश्न बन गया है द्य दर्दनाक हादसे में किसी ने अपना पति तो किसी ने अपनी पत्नी खोई है द्य कोटली व घुमारवीं में हुए इन हादसों से लोग मातम में हैं द्यवर्ष 2018 में शिमला से 130 किलोमीटर दूर मुगंरा में एक वाहन के खाई में गिरने से 13 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई थी ।हादसें में मरने वालों में पांच लोग एक ही परिवार के थे मरनेवालों में ज्यादातर चिड़गांव के गावों के थे । मरने वालों में चार महिलाएं आठ पुरुष व एक बच्ची थी । मृतक आपस में करीबी रिश्तेदारथे ।मौत के इस दर्दनाक मंजर में हुई इन अकाल मौतों से हर हिमाचली गमगीन हुआ था ।यह लोग हाटकोटी से उतराखंड में मदिर दर्शन को जा रहे थे ।मगर मंदिर पहुचने से पहले ही काल के गाल मे समा गए। हर रोज सड़के खून से लाल हो रही है लाशो के ढेर लग रहे है ।लापरवाही से घरों के चिराग असमय बुझते जा रहे हैं। परिवार के परिवार खत्म हो रहे है ।लाशो के अग्नि देने वाले भी नहीं बच रहे है ।हजारो लोग तामउम्र हादसों का दंश झेल रहे है ।पल भर में जीता-जागता आदमी लाशों के चिथड़ों में तब्दील हो रहा है ।बच्चे अनाथ हो रहे है ।प्रदेश में प्रतिदिन हो रहे इस मौत के ताडव को रोकने के लिए कारगर कदम उठाने होगें। इन सड़क हादसों से हर हिमाचली उद्वेलित है। गत वर्ष शिमला के रामपुर के खनेरी में पास बस के खाई में गिर जाने से 28 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई थी। कांगडा के देहरा के ढलियारा में श्रध्दालूओं की एक बस खाई में गिरने से 10 लोगों की मौत हो गई र्थी और 45 के लगभग बुरी तरह से घायल हो गए थे ।बस 200 मीटर गहरी खाई में गिरी थी ।प्रदेश में हर रोज हादसों का सिलसिला जारी है ।प्रतिदिन भीषण हादसे होते जा रहे है ।प्रदेश में एक दिन में 13 लोगों की मौतें बहुत ही दुखद है। प्रदेश में ऐसा कोई दिन नहीं होता जब किसी की सड़क हादसे में मौत न हुई हो हादसों का यह क्रम लगातार जारी है ।सबक न सीखना लोागों की आदत बन गया है इतने हादसे हो रहे है मगर सुधार शून्य ही है ।इस पर मंथन करना होगा। जनवरी 2023से लेकर अक्टूबर 2025 के चार महिनों में हजारों हादसे हो चुके है और हजारों लोग मारे जा चुके है और यह सिलसिला थमनें का नाम नहीं ले रहा है। इससे पहले कई भीषण हादसे हो चुके है ।कुछ साल पहले भीषण हादसा मंडी के झिड़ी में हुआ था जब एक निजि बस चालक की लापरवाही के कारण 40 से अधिक लोगों की असमय मौत हो गई थी। व्यास नदी में गिरी इस बस में लगभग 70 सवारियां सवार थी। चालक कथित तौर पर मोबाईल फोन पर बात कर रहा था कि बस अनिंयत्रित हो गई और नदी में समा गई। पल भर में ही यात्री लाशों में तब्दील हो गये। गनीमत रही कि राफटिंग दल ने जान जोखिम में डालकर 17 लोगों की जिदंगियां बचा ली नही तो मरने वालों का आंकडा 60 हो जाता यह हादसा नहीं सरासर हत्या थी कि चालक ने खुद छलांग लगाकर यात्रियों को असमय मौत के मुहं में धकेल दिया। बीते हादसों से न तो यात्रियों ने सबक सीखे और न ही प्रशासन ने कोई सबक सीखा ।अक्सर देखा गया है कि ज्यादातर हादसे ओवरलोडिगं के कारण होते है क्योकि इस 42 यात्रियों कि क्षमता वाली बस में 70 यात्री सफर कर रहे थे। कांगडा के आशापुरी में तथा बिलासपुर के बंदला में भी ऐसे भीषण हादसे हो चुके हैं। अप्रैल माह में चंबा में भी 12 यवकों की मौत हो गई थी। हमीरपुर में भी मजदूर दिवस के दिन एक टाटा सूमों के खाई में गिरने से 10 मजदूरों की मृत्यु हो गई थी ।बीते 2024 में इतने बड़े-बड़े हादसे हुए मगर इसमें सुधार नहीं हुआ ।आखिर कब थमेगा यह मौत का मंजर इसका जबाव प्रशासन को देना होगा। प्रतिवर्ष हजारों लोग हादसों का शिकार होते है तथा इतने ही घायल होते है लोग असमय काल के गाल में समाते जा रहे हैं मगर हालात सुधरने के बजाए बिगड़ते ही जा रहे है लोग बीते हादसों को कैसे भूल जातें है हिमाचल में हर रोज लापरवाही के कारण लोगों को मौत नसीब हो रही है अगर लोग जरा सी सावधनी बरते तो हादसों को रोका जा सकता है और अनमोल जीवन को बचाया जा सकता है ।बीते हादसों पर नजर डाली जाए तो रौगटे खडे हो जाते है। सड़को पर मौत रेंग रही है और सड़के रक्तरंजित हो रही हैं। अमूमन देखा गया है कि निजि बसों के कारण ज्यादातर दुर्घटनाएं हो रही है। क्योकि इन बसों में अप्रशिक्षित चालकों की लापरवाही के कारण भंयकर हादसे हो रहें हैं। मोबाइल पर प्रतिबन्ध है लेकिन इसकी खुजेआम धज्जियां उडाई जा रही है। प्रशासन भी हादसे के कुछ दिन सक्रियता दिखाता है फिर वही हालात हो जातें है। लोग भी किराये में कुछ रियायत के कारण सरकारी बसों में यात्रा न कर निजि बसों को अहमिहत देतें है और जिदंगियों से खिलवाड करवातें है। चंद चांदी के सिक्कों की खतिर बसों के परिचालक बसों में अपेक्षा से अधिक यात्रियों को बिठाते है और खुद मौत को निमंत्रण देते हैं। प्रतिदिन सडकों पर ओवरलोडिग बसें सरपट दौडती रहती है मगर प्रशासन आखें बंद करके सोया रहता है जब हादसा हो जाता है तब इसकी कुभंकरणी नींद टूटती है । प्रशासन के पहुचनें तक लोगों की सासें खत्म हो चुकी होती है। यदि प्रशासन समय= पर कारवाई करता रहे तों इन हादसों पर लगाम लग सकती है। मगर ऐसा नहीं होता ।समझ से परे है कि प्रशासन जितना पैसा राहत कार्यों में बांटता है यदि पहले ही सुरक्षा बरती जाए तो लोगों की अनमोल जिन्दगियां बच सकती हैं। एक व्यक्ति की लापरवाही का खामियाजा लोगों को जान देकर भुगतना पड रहा है। ऐसे लोगों को सजा-ए -मौत देनी चाहिए जो जानबूझकर लोगों की मौत का कारण बनते हैं। यह हादसा इतने जख्म दे गया कि लोगों को उबरने में वर्षों लग जाएगें। इसमें घरों के चिराग बूझ गये कई बच्चों के सिर से बाप का साया उठ गया तो कई माताओं व बहनों के सुहाग छिन गये, माता -पिता के बुढापे के सहारे असमय काल के गाल मे समा गए। इस हादसे मे आनी के एक परिवार के चार सदस्यों की मौत हो गई। विशेषज्ञ रिपोटों में सामने आता है कि 80 फीसदी हादसे चालकों की लापरवाही के कारण होतें है जबकि 20 फीसदी तकनीकी खराबी के कारण होतें है। हर हादसे के बाद मैजिस्ट्रेट जांच होती है मगर कुछ समय बाद यह भी ठंडे बस्ते में पड जाती है ।ऐसे हत्यारे चालकों को सरेआम सजा देनी चाहिए ताकि भविष्य में कीमती जाने बच सके। ऐसे हादसे क्यों नहीं रूक पा रहे है यह एक यक्ष प्रश्न बनता जा रहा है।

सुप्रीम कोर्ट के जजों की टिप्पणियाँ विवादों में

सुप्रीम कोर्ट के दो सदस्यों की खंडपीठ ने शुक्रवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ कोर्ट में एक एसी टिप्पणी की, जिसकी चर्चा देशभर में हो रही है। राहुल गांधी द्वारा की गई विनायक दामोदर राव सावरकर पर की गई टिप्पणी को सुप्रीम कोर्ट ने गैर जिम्मेदाराना बताते हुए सख्त लहजे में कहा, यदि दोबारा राहुल गांधी द्वारा स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का मजाक बनाया गया, विनायक दामोदर सावरकर के खिलाफ यदि कोई बयान दिया गया, तो हम स्वयं संज्ञान लेकर राहुल गांधी पर कार्रवाई करेंगे। सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी एक ऐसे मामले में आई, जिसमें राहुल गांधी ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के उस आदेश के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील की थी, जिसमें हाईकोर्ट ने ट्रायल कोर्ट से जारी समन को रद्द करने से इनकार किया था। हाईकोर्ट ने अपने आदेश में कहा था, राहुल गांधी सेशन कोर्ट में पुनरीक्षण याचिका दायर कर सकते हैं। इस मामले की अपील राहुल गांधी की ओर से सुप्रीम कोर्ट में पेश की। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में सुनवाई की। राहुल गांधी के खिलाफ जो आपराधिक कार्रवाई चल रही थी, उस पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी है। यह मामला सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस मनमोहन की बेंच में सुनवाई के लिए लगा था। 17 नवंबर 2022 को भारत जोड़ो यात्रा के दौरान महाराष्ट्र के अकोला में दामोदर राव सावरकर के खिलाफ राहुल गांधी ने टिप्पणी की थी। इस बयान के बाद देश भर में राहुल गांधी के खिलाफ कई स्थानों पर मुकदमे दर्ज किए गए। सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के दौरान मौखिक टिप्पणी करते हुए कहा, स्वतंत्रता सेनानियों के साथ ऐसा व्यवहार ठीक नहीं है। कानून के आधार पर राहुल गांधी को राहत दी जा रही है। सुप्रीम कोर्ट ने जब अपना फैसला लिखा, उसमें जो टिप्पणी की गई थी। उसका कोई उल्लेख नहीं है। पिछले कुछ वर्षों से सावरकर की विचारधारा को लेकर सरकार उन्हें स्वतंत्रता संग्राम का महानायक बनाने का प्रयास कर रही है। पिछले कुछ दशकों में इंग्लैंड से बहुत सारे ऐसे दस्तावेज जो ब्रिटिश सरकार के पास थे, वे एक लंबे समय के बाद भारत सरकार के पास समय-समय पर वापस लौटे हैं। इन दस्तावेजों में वीर सावरकर जब जेल में बंद थे उस समय लिखे पत्र भी सार्वजनिक हुए। यह पत्र कब भारत सरकार को मिले हैं इसकी जानकारी तो नहीं है। दामोदर राव सावरकर शुरुआती दौर में अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में उतरे थे। जब उन्हें जेल हुई, उसके बाद उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन से अलग होते हुए, अंग्रेज सरकार से माफी मांगी। अपने आप को अंग्रेज सरकार का मुलाजिम बताते हुए सरकार को भरोसा दिलाया था, सरकार जो कहेगी वह करेंगे। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान दामोदर राव सावरकर ने अंग्रेजों की सेना में युवाओं की भरती के लिए

अभियान चलाया था। ब्रिटिश सरकार द्वारा जो दस्तावेज सार्वजनिक किए गए हैं, उसके अनुसार दामोदर राव सावरकर को अंग्रेज सरकार से पेंशन भी मिलती थी। इस बात की जानकारी दस्तावेजों के माध्यम से बहुत बाद में प्राप्त हुई है। दामोदर राव सावरकर ने छदम नाम से एक पुस्तक लिखी। जिसमें उन्हें वीर सावरकर के रूप में प्रस्तुत किया गया। 2014 में जब से केंद्र में भाजपा की सरकार आई है। उसके बाद से वीर सावरकर को महिमा मंडित करते हुए, स्वतंत्रता संग्राम का महान आंदोलनकारी और विचारक बताने की एक नई कोशिश शुरू की गई है। नाथूराम गोडसे जिन्होंने महात्मा गांधी की हत्या की थी, उन्हें भी महानायक बनाया जा रहा है। जगह-जगह उनके मंदिर बनने लगे। इसके साथ ही महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू जैसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के बारे में उनकी आलोचना करते हुए, गलत तथ्यों के आधार पर, देश में एक नई राजनीति शुरू हुई है। राहुल गांधी जिस मामले को लेकर सुप्रीम कोर्ट गए थे। सुप्रीम कोर्ट मे जो याचिका उन्होंने लगाई थी। उस पर विचार करके कोर्ट को निर्णय देना था। पिछले कुछ वर्षों में महात्मा गांधी, इंदिरा गांधी, जवाहरलाल नेहरू एवं अन्य स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के बारे में गलत तथ्यों के साथ आलोचना एक पक्ष द्वारा प्रचारित की जा रही है। इसी पक्ष द्वारा वीर सावरकर और नाथूराम गोडसे को लेकर जो बातें प्रचारित की जा रही हैं, वह सत्य से परे हैं। इस पर राजनीतिक संग्राम तो होना ही था। वह हो भी रहा है। सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट में पिछले कुछ वर्षों से मामलों की सुनवाई के दौरान तरह-तरह की टिप्पणियां जजों द्वारा की जाती हैं। जब उन्हीं मामले में आदेश आते हैं। उनमें न्यायालय में जो टिप्पणियां जजों द्वारा की गई थी वह आदेश में देखने को नहीं मिलती हैं। न्यायालय में जजों द्वारा जो मौखिक टिप्पणियां की जाती हैं, उन्हें लेकर सरकार और एक राजनीतिक संगठन उसका इस्तेमाल अपने राजनीतिक फायदे के लिए करने लगता है। जिसके कारण अब हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के जज भी राजनीतिक विवाद का विषय बनने लगे हैं। पूर्व सीजेआई रंजन गोगोई, कोलकाता के एक जज महोदय वहां की राज्य सरकार के खिलाफ सुनवाई के दौरान तरह-तरह की टिप्पणी करते रहे। जिसके कारण पश्चिम बंगाल की राज्य सरकार को समय-समय पर काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। वही जज महोदय इस्तीफा देकर भाजपा में आ गए और सांसद बन गए। कोर्ट की मौखिक टिप्पणियों को आधार बनाकर सरकार उसे निर्णय के रूप में प्रचारित करती है। जन सामान्य के बीच में यह धारणा बनने लगी है। हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के जज सरकार के खिलाफ जो भी मामले होते हैं उन मामलों में सरकार को विशेष तरजीह देती है। जबकि न्यायालय के लिए सभी पक्ष समान रूप से बराबर हैं। जब निर्णय आते हैं, न्यायालय द्वारा जो टिप्पणियां मौखिक रूप से की गई हैं। जब उनके अनुकूल फैसला देखने को नहीं मिलता हैं, तो लोगों का न्यायपालिका पर विश्वास कम होने लगता है। कोर्ट द्वारा जो भी टिप्पणी की जाती है यदि वह सभी के ऊपर समान रूप से लागू की जाती हैं तो इससे आमजनों का न्यायपालिका के ऊपर विश्वास बढ़ेगा। यदि वही टिप्पणियां केवल एक वर्ग विशेष के बारे में की जाती हैं। आदेश में उन्हें स्थान नहीं मिलता है। दूसरे पक्ष द्वारा यदि वही कार्य किये जा रहे हैं, न्यायालय द्वारा उन्हें अनदेखा किया जाता है। हजारों मामले में यह अंतर पिछले कुछ वर्षों में देखने को मिल रहा है। जिसके कारण न्यायपालिका की विश्वसनीयता और न्याय प्रक्रिया पर लोगों के मन में सवाल उठने लगे हैं। न्यायपालिका की विश्वसनीयता और निष्पक्षता को बनाए रखने की जिम्मेदारी हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट की है। जिस तरह से वीर सावरकर को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने राहुल गांधी को चेतावनी दी है। एक बार फिर सुप्रीम कोर्ट की उस टिप्पणी की बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया देश में देखने को मिल रही है। पिछले कुछ वर्षों मे वीर सावरकर और नाथूराम गोडसे और उनकी विचारधारा को लेकर देश में नई राजनीति शुरू हुई है।

जंगली सूअर का मटन बताकर ग्राहक ढूंढते दो युवक पकड़ाए

बालोद में वन विभाग ने 20 पैकेट मांस किया जब्त, दुर्ग से लाए थे मांस

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ के बालोद जिले में दुर्ग के दो युवक राहगीरों को मांस दिखाकर उसे जंगली सूअर बरहा का मटन बताकर बेचने की कोशिश कर रहे थे। सूचना मिलते ही वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और मांस के पैकेट समेत दोनों युवक को हिरासत में ले लिया। दरअसल, मामला बालोद जिला मुख्यालय से 24 किमी दूर नारागांव के जंगल का है। जहां सोमवार सुबह दुर्ग जिले के पाउवारा गांव के दो युवक काले पॉलीथिन में मटन पैक कर बेचते नजर आए। राहगीरों के पूछने पर उन्होंने मटन को जंगली सूअर का बताकर पेश किया। सूचना तेजी से फैली और वन विभाग की टीम ने मौके पर पहुंचकर पउवारा दुर्ग निवासी दमेश देवार 33 और गोलू ठाकुर 21 को पकड़ लिया। पूछताछ में पता चला कि दोनों युवक दुर्ग

जिले के पाउवारा गांव से मटन का एक-एक किलो के पैकेट बनाकर बाइक से निकले थे और नारागांव क्षेत्र में ग्राहक तलाश रहे थे। युवकों की संदिग्ध गतिविधियां देखकर राहगीरों और ग्रामीणों ने तुरंत वन विभाग को सूचना दी। जिसके बाद टीम ने मौके पर पहुंचकर कार्रवाई की।वन विभाग के अनुसार यह पता लगाने के लिए कि मांस जंगली सुअर का है या पालतू सूअर का जांच कराई जाएगी। इसके लिए पशु चिकित्सा विभाग की टीम को मौके पर बुलाकर मांस के सैंपल एकत्र किए गए। जिन्हें जबलपुर लैब भेजा जाएगा। रिपोर्ट में यदि मांस जंगली जानवर का पाया गया तो आरोपियों के खिलाफ वन्य प्राणी संरक्षण अधिनियम के तहत कार्रवाई की जाएगी। इस मामले को लेकर भास्कर ने वन विभाग के एसडीओ डिम्पी बैस और गुरुर क्षेत्र की रेंजर हेमलता उइके से बातचीत की। अधिकारियों ने बताया कि मटन को जब्त कर लिया गया है और जांच के बाद ही स्पष्ट होगा कि मांस जंगली सुअर का है या पैसे के लालच में उसे जंगली बताकर बेचा जा रहा था। फिलहाल प्रारंभिक जांच जारी है और आगे की कार्रवाई जांच रिपोर्ट के आधार पर की जाएगी।

मरवाही के कोड़गार जंगल में मशीनों से पौधरोपण

मरवाही वनमंडल के पेंड्रा रेंज स्थित कोड़गार जंगल में वन विभाग पौधरोपण के लिए मजदूरों की जगह मशीनों का उपयोग कर रहा है। कैंपा मद और ग्रीन पैडीट योजना के तहत 105 हेक्टेयर क्षेत्र में 1 लाख से अधिक पौधे लगाए जाने हैं। पेंड्रा रेंजर के अनुसार अब तक लगभग 80 हजार गड्ढों की खुदाई हो चुकी है। वन विभाग का कहना है कि मजदूर नहीं मिल रहे हैं। हालांकि स्थानीय लोगों का आरोप है कि उन्हें काम की जानकारी ही नहीं दी गई। वन्य जीव क्षेत्र में मशीनों का उपयोग प्रतिबंधित है। कोड़गार से अमारू मार्ग पर स्थित साल-सरई के घने जंगल में कई वन्य जीव रहते हैं। मशीनों के कारण वन्य जीव रिहायशी इलाकों की ओर पलायन कर रहे हैं। साल-सरई के पौधे प्राकृतिक रूप से उगते हैं। इन्हें परिपक्व होने में लगभग 100 वर्ष लगते हैं। मशीनों के बड़े पहिए इन छोटे पौधों को नष्ट कर रहे हैं। वन्य जीव क्षेत्र में मशीनों का उपयोग प्रतिबंधित है। कोड़गार से अमारू मार्ग पर स्थित साल-सरई के घने जंगल में कई वन्य जीव रहते हैं। मशीनों के कारण वन्य जीव रिहायशी इलाकों की ओर पलायन कर रहे हैं। साल-सरई के पौधे प्राकृतिक रूप से उगते हैं। इन्हें परिपक्व होने में लगभग 100 वर्ष लगते हैं। मशीनों के बड़े पहिए इन छोटे पौधों को नष्ट कर रहे हैं।

ट्रैक्टर से टकराई बाइक, 1 की मौत

अंबिकापुर में खरीददारी कर घर लौट रहे थे 3 दोस्त, 2 घायलों का इलाज जारी

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

अंबिकापुर-रायगढ़ मुख्य मार्ग में सड़क हादसे में एक युवक की मौत हो गई। रविवार रात आकाश अपने 2 साथियों के साथ खरीददारी कर वापस घर लौट रहा था तभी नेशनल हाईवे 43 बालमपुर के पास रविवार उनकी बाइक ट्रैक्टर से टकरा गई और तीनों फेंका गए। घटना सीतापुर थाना क्षेत्र की है। हादसे के बाद तीनों दोस्तों को अस्पताल लाया गया जहां आकाश 20 को डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। वहीं, 2 अन्य दोस्त घायल हुए है जिनका इलाज जारी है। जानकारी के मुताबिक, आकाश ही ड्राइव कर रहा था और उसके सिर,सीने और हाथों में गंभीर चोटें आई थीं। तीनों ने हेलमेट नहीं पहना था। मृतक आकाश पेट्रोल पंप में काम करता था। पेट्रोल पंप में काम करने के बाद वह शाम को सीतापुर गया था। हादसे के बाद ट्रैक्टर का चालक वाहन लेकर फरार हो गया। जानकारी के मुताबिक, मृतक आकाश मंगारी का रहने वाला था। वही शनि एवं दीपराज के साथ सीतापुर बाजार आया था। सीतापुर बाजार में उन्होंने खरीददारी की। रात करीब 8 बजे पल्सर बाइक में सवार होकर वापस अपने घर मंगारी लौट रहे थे, तभी हादसा हुआ। बताया जा रहा है हादसे के बाद बाइक सवार सड़क पर गिर कर अचेत हो गए थे। ग्रामीणों की सहायता से तीनों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सीतापुर पहुंचाया गया। बाइक चला रहे युवक सीतापुर में प्राथमिक उपचार के दौरान ही आकाश की मौत हो गई। अन्य दो घायलों शनि एवं दीपराज का उपचार किया जा रहा है। सीतापुर पुलिस ने अज्ञात ट्रैक्टर के चालक के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार तीनों युवकों ने हेलमेट नहीं पहना था। तेज रफ्तार में बाइक के अनियंत्रित हो जाने के बाद वे ट्रैक्टर की ट्राली से जा टकराए।

ASI ने बेटी को ढूंढने मां से 20,000 रिश्वत ली

मेरे साथ 3 पुलिसकर्मी राजस्थान जाएंगे, रहने-खाने के पैसे लगेंगे

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में एक ASI ने 20 हजार रुपए की रिश्वत ली है। एक महिला की नाबालिग बेटी पिछले 4 महीनों से लापता है। वह थाने के चक्कर काट रही थी, लेकिन जांच में पता चला कि उसकी बेटी राजस्थान में है जिसे खोजकर लाने के एवज में स्थ्र हेमंत पाटले ने पैसे की डिमांड की। थाने में इस पूरी घटना का वीडियो पीड़ित महिला के बेटे ने बनाया है जो अब वायरल हो रहा है।जिसमें ASI अपने साथ 3 पुलिसकर्मियों के राजस्थान जाने और उसमें पैसे खर्च होने की बात कह रहा है। इसी दौरान रिश्वत के पैसे लेने के लिए ASI महिला को थाने के कमरे में बुलाता है। लेकिन महिला के साथ आ रहे उसके बेटे को वहां से भगा देता है। इसलिए पैसे लेने की घटना कैमरे में कैद नहीं हो सकी। वीडियो में पैसे की डिमांड करने के आधार पर SSP रजनेश सिंह ASI को सस्पेंड कर दिया है। दरअसल, कोटा क्षेत्र में रहने वाली महिला की 16 वर्षीय नाबालिग बेटी पिछले चार महीने से लापता है। महिला ने बेटी की तलाश की, पर वह नहीं मिली। जिसके बाद उसने थाने में शिकायत दर्ज कराई, जिस पर पुलिस अपहरण का केस दर्ज कर उसकी तलाश कर रही थी। पुलिस की जांच में पता चला कि नाबालिग लड़की राजस्थान में है।इस दौरान महिला ने अपनी बेटी को खोजकर लाने के लिए कहा, तब स्थ्र हेमंत पाटले ने राजस्थान जाने के लिए खर्च लगने की बात कहते हुए कहा कि, उतना दूर जाकर उसे ढूंढना पड़ेगा। मैं अकेले नहीं जाऊंगा, मेरे साथ तीन और पुलिसकर्मी जाएंगे। वहां रहने खाने के लिए वह पैसे लगेंगे, और फिर पैसे की डिमांड की।

फर्जी TTE यात्रियों से कर रहा था वसूली

सारनाथ एक्सप्रेस में बर्थ दे रहा था, RPF की पेट्रोलिंग टीम ने पकड़ा, गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ के दुर्ग से होकर छपरा तक चलने वाली सारनाथ एक्सप्रेस में फर्जी TTE यात्रियों से अवैध वसूली कर रहा था। वो स्लीपर कोच में यात्रियों को बर्थ बांट कर पैसे की वसूली करते मिला। इस दौरान RPF की पेट्रोलिंग टीम को शक हुआ, तब उससे पूछताछ की। जिसके बाद उसे पकड़कर पेंड्रारोड रेलवे स्टेशन पर उतारकर GRP को सौंपा गया। उसके खिलाफ केस दर्ज कर उसे गिरफ्तार किया गया है। दरअसल, समर वेकेशन के चलते इन दिनों ट्रेनों में यात्रियों की काफी भीड़ चल रही है। इसके चलते कंफर्म बर्थ मिलना मुश्किल हो गया है। ऐसे में यात्री बर्थ नहीं होने के बाद भी ट्रेनों में सफर करने के लिए मजबूर हैं। घटना शनिवार रात की है। सारनाथ एक्सप्रेस में सुरक्षा के लिए RPF की टीम को पेट्रोलिंग पर लगाया गया है। उसलापुर स्टेशन से ट्रेन रवाना हुई, तब RPF की टीम कोच की जांच कर ही थी। इस दौरान एक व्यक्ति को देखा, तब जवानों को संदेह हुआ। वह खुद को TTE बताकर यात्रियों को बर्थ बांट रहा था और अवैध वसूली कर रहा था। संदेह के आधार पर उससे पूछताछ की गई। इस दौरान ट्रेन में चल रहे असली TTE रवि कुमार शर्मा से RPF ने जानकारी ली। जिसके बाद संदेही को पकड़कर उसके पास लेकर गए। रेलवे के अधिकृत TTE रवि शर्मा ने उसके फर्जी होने की जानकारी दी। जिसके बाद उसे पेंड्रारोड स्टेशन पर उतारा गया।

अंबिकापुर निगम में पेश बजट

694 करोड़ का बजट, दो करोड़ घाटे का अनुमानित, नए टैक्ट पर रहेगी नजर

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

अंबिकापुर नगर निगम की नई सरकार का पहला बजट आज महापौर मंजूषा भगत पेश करेंगी। निगम में एक दशक बाद भाजपा का कब्जा हुआ है। पहली महिला महापौर मंजूषा भगत बजट में कई घोषणाएं कर सकती हैं, जो भाजपा के चुनावी घोषणापत्र का हिस्सा थी। इस बार बजट में दो करोड़ का घाटा अनुमानित है। सामान्य सभा 12 बजे से शुरू हो गई है। अंबिकापुर नगर निगम में 10 साल बाद भाजपा की सरकार ने वापसी हुई है। नगर निगम की महापौर मंजूषा भगत ने 2 मार्च को अपना पदभार ग्रहण किया था। सोमवार को आयोजित सामान्य सभा में महापौर भगत पहली बार अपनी सरकार का पहला बजट पेश करेंगी। महापौर मंजूषा भगत ने बताया कि, 6 अरब 94 करोड़ 6 लाख रुपए आय के विरुद्ध 6 अरब 96 करोड़ 4 लाख रुपए व्यय का अनुमान पेश जाएगा। निगम को 1 करोड़ 98 लाख 21 हजार रुपए घाटे का अनुमान है। बजट में अधोसंरचना मद, स्वच्छता प्रबंधन, महामाया कारीडोर निर्माण सहित अन्य विकास कार्यों की घोषणा होगी। सामान्य सभा में नगर निगम की सत्ता पक्ष के साथ ही विपक्ष द्वारा भी बड़े पैमाने पर तैयारियां की गई है। रविवार को सामान्य सभा से पहले पार्षद दल की बैठक आयोजित की गई जिसमें विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई। महापौर मंजूषा भगत ने बजट सत्र के पूर्व कहा कि, हम घाटे का बजट पेश कर रहे हैं। निगम के पास आय के स्रोत की कमी है। आय का स्रोत बढ़ाने के लिए आने वाले समय में प्रयास किए जाएंगे। इसके साथ ही विकास कार्यों को बजट में शामिल किया गया है।

काली पट्टी लगा पहुंचे कांग्रेसी

महापौर मंजूषा भगत द्वारा गंगाजल से शुद्धिकरण और महापौर की कुर्सी बदलने के बयान के विरोध में कांग्रेसी पार्षद काली पट्टी बांध कर पहुंचे। महापौर मंजूषा भगत ने कहा कि उन्होंने ऐसा कोई बयान नहीं दिया। किसी की भावना को ठेस पहुंचाना उद्देश्य नहीं था। इसके बाद कांग्रेस पार्षदों ने काली पट्टी उतार दी।

सांसद चिंतामणि पहुंचे सामान्य सभा में...

नगर निगम की सामान्य सभा में सांसद चिंतामणि महाराज भी पहुंचे। महापौर मंजूषा भगत सहित नेता प्रतिपक्ष शफी अहमद ने सांसद का स्वागत किया। शफी अहमद ने कहा कि पूर्व के 10 सालों में निगम को सांसद मद से राशि नहीं मिली। सांसद चिंतामणि महाराज कुछ राशि नगर विकास के लिए जरूर देंगे। शहर की खराब सड़कों को सुधारने के लिए पहल की मांग भी शफी अहमद ने रखी।

प्री-पॉलिटेक्निक टेस्ट 01 मई 2025 को

परीक्षार्थियों के लिए दिशा-निर्देश जारी

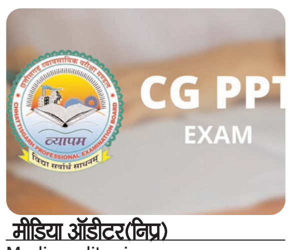

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मण्डल रायपुर द्वारा 01 मई 2025 दिन गुरूवार को प्री-पॉलीटेक्निक (PPT2025) प्रवेश परीक्षा प्रातः 09:00 से 12:15 बजे तक जिले के 02 परीक्षा केन्द्रों क्रमशः शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेन्द्रगढ़ तथा बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मनेन्द्रगढ़ में आयोजित होना नियत है। अतएवं उक्त परीक्षा में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों हेतु निम्नानुसार दिशा-निर्देश जारी किया जाता है। परीक्षा दिवस को प्रत्येक परीक्षार्थी एक घंटे पूर्व अपने परीक्षा केन्द्र में उपस्थित हो, जिससे उनके मूल पहचान पत्र से उनका पहचान किया जा सकें एवं परीक्षा केन्द्र में जाने हेतु अनुमति दी जा सके। परीक्षार्थी परीक्षा दिवस से एक दिवस पूर्व अपने परीक्षा केन्द्र की भौगोलिक स्थिति से भली-भॉती परिचित हो जाये। परीक्षा प्रारंभ होने के पश्चात् किसी भी परीक्षा केन्द्र में प्रवेश नहीं दिया जायेगा। परीक्षार्थियों को अपना फोटोयुक्त मूल आई.डी. प्रूफ जैसे मतदाता पहचान पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस, पेन कार्ड, आधार कार्ड, पासपोर्ट, विद्यालय का फोटोयुक्त परिचय पत्र, फोटोयुक्त अंकसूची मूलरूप में (फोटो कॉपी मान्य नहीं) परीक्षा दिवस में परीक्षा केन्द्र में लाना अनिवार्य होगा। मूल पहचान पत्र के अभाव में परीक्षा केन्द्र में प्रवेश नहीं दिया जायेगा। परीक्षार्थियों को परीक्षा केन्द्र में मोबाईल एवं अन्य डिवाईस ले जाना वर्जित है।

मोबाइल टॉर्च की रोशनी में डिलीवरी

गरियाबंद के अस्पताल में 8 घंटे बिजली गुल, एंबुलेंस तक नहीं, 80 हजार की आबादी निर्भर

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले में मोबाइल टॉर्च की रोशनी से एक महिला की डिलीवरी कराई गई है। अमलीपदर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में 26 अप्रैल को 8 घंटे से बिजली सप्लाई बंद थी। उसी दौरान दाबरीगुड़ा से एक गर्भवती महिला प्रसव के लिए पहुंची थी। दर्द से तड़प रही महिला का इलाज तुरंत जरुरी था। इमरजेंसी में डॉक्टरों की टीम ने मोबाइल की रोशनी से ही डिलीवरी करवा दी। गर्भवती की डिलीवरी के दौरान डॉक्टर इंद्रजीत, नर्स वंदना लखरा और एक मितानिन मौजूद थी, जिन्होंने महिला का नॉर्मल प्रसव कराया। मां और नवजात दोनों स्वस्थ्य हैं। जानकारी के मुताबिक, 2022 में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को अपग्रेड कर इसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बनाया गया। लेकिन अभी तक यहां आवश्यक सुविधाएं नहीं दी गई हैं। इस अस्पताल पर 40 से अधिक वन और दूरस्थ गांवों की करीब 80 हजार की आबादी निर्भर है। लेकिन यहां इमरजेंसी के लिए एम्बुलेंस की सुविधा तक नहीं है।

इसलिए इमरजेंसी में करानी पड़ी डिलीवरी

नर्स वंदना लखरा ने बताया कि, अस्पताल में इन्वर्टर की व्यवस्था नहीं थी। सोलर सिस्टम कम क्षमता के कारण काम नहीं कर रहा था। इसके अलावा यहां कोई सुरक्षा व्यवस्था भी नहीं है। नर्स ने सुरक्षा के लिहाज से सीसीटीवी कैमरा लगाने की भी मांग की। प्रभारी चिकित्सक डॉ. इंद्रजीत ने बताया कि अस्पताल में सीसीटीवी और लाइट के लिए कई बार मांग रखी गई लेकिन कुछ नहीं हुआ। इसके साथ ही अस्पताल परिसर में बाउंड्री वॉल नहीं होने के कारण असामाजिक तत्वों का डेरा भी लगा रहता है। हालांकि महिला की स्थिति को देखते हुए सुरक्षित डिलीवरी कराई गई है। मितानिन ने बताया कि इतना बड़ा हॉस्पिटल होते हुए भी कोई सुविधा हमें नहीं मिल रही है। मरीज को रेफर करते हैं तो डॉटर डांटते है कि इतनी रात मरीज को कैसे ले आए।

सुविधाओं की कमी से जूझ रहा अस्पताल...

वहीं, जानकारी ये भी सामने आई है कि अस्पताल में 102 एंबुलेंस सेवा भी नहीं है। प्रसव कक्ष और इमरजेंसी कक्ष में बिजली का बैकअप नहीं है। वैसीन सिस्टम सिर्फ सोलर पर निर्भर है। भवन की बाउंड्री वॉल नहीं है और सुरक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरे भी नहीं लगे हैं। स्टाफ और चिकित्सकों की भी कमी है। इन कमियों के कारण क्षेत्र के अधिकांश ग्रामीण निजी या अप्रशिक्षित चिकित्सकों की सेवाएं लेने को मजबूर हैं।

रात में एमसीएच ले जाया गया

इसके बाद आसपास के लोगों ने तत्काल 108 एबुलेंस को कॉल कर बुलाया, फिर महिला को नवजात के साथ एमसीएच (मातृ शिशु अस्पताल) ले जाया गया। जहां बच्चे का नाल काटा गया, फिर उसे मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती होने की सलाह दी गई।

जंगल में फंदे से लटकते मिले गर्लफ्रेंड-बॉयफ्रेंड

सूरजपुर में 2 दिन पहले घर से निकला था युवक, लड़की की नहीं हो पाई पहचान

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

सूरजपुर जिले में प्रेमी-प्रेमिका की लाश एक ही फंदे से लटकती मिली है। युवक की पहचान बृज नगर निवासी छोटू सिंह (20) के रूप में हुई है। वहीं लड़की की पहचान नहीं हो पाई है। छोटू सिंह 26 अप्रैल को अपने घर से निकला था लेकिन लौटा नहीं, जिसके शव को गांव के वालों ने ही पहचान की है। घाघी कोन्हा के जंगल में दोनों ने एक ही चुन्नी से बने फंदे से फांसी लगाई है। मामला जयनगर थाना क्षेत्र के लटोरी चौकी इलाके का है। सोमवार सुबह दोनों के शव को बरामद कर लिया गया है। दोनों ने किस कारण साथ मरने का फैसला किया इसकी जांच की जा रही है। पुलिस के मुताबिक शवों की स्थिति से आत्महत्या का मामला लग रहा है। मौके पर सुसाइड नोट नहीं मिला। फिलहाल पुलिस प्रेम-प्रसंग में आत्महत्या और अन्य एंगल से जांच कर रही है। दोनों के शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया है। युवती कौन थी, इसका अब तक पता नहीं चल पाया है। न तो गांव में कोई उसे पहचानता है, न ही आस-पास के इलाकों में उसकी कोई जानकारी मिली है। लटोरी पुलिस चौकी प्रभारी अजय गुप्ता ने बताया कि आसपास के थाना और चौकी क्षेत्रों में शव मिलने की जानकारी दी गई है। सोशल मीडिया में भी फोटो वायरल कर पहचान की कोशिश की जा रही है। युवक के परिजन भी युवती की पहचान नहीं कर सके हैं।

कांग्रेस का 'संविधान बचाओ' अभियान मई से शुरू होगा

पहलगाम हमले के बाद लगा था ब्रेक, दुर्ग में होगी राज्य स्तरीय रैली

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

कांग्रेस का 'संविधान बचाओ' अभियान जो पहलगाम आतंकी हमले के बाद अचानक रोक दिया गया था। अब मई से फिर शुरू होने वाला है। फिलहाल, हृष्ट के निर्देश पर प्रदेश कांग्रेस कार्यकारिणी की एक बैठक तो हो गई है, लेकिन असली मैदान में उतरने का काम यानी राज्य, जिला और विधानसभा स्तर की रैलियां अभी बाकी हैं। इसके साथ ही घर-घर जाकर लोगों तक पहुंचने का प्लान भी है। जानकारी के मुताबिक, दुर्ग में ही राज्य स्तरीय रैली का आयोजन किया जाएगा। इसके बाद बाकी जगहों में कार्यक्रम होंगे। हालांकि अभी नया शेड्यूल जारी

नहीं किया गया है, लेकिन मई के पहले हफ्ते से ही कार्यक्रम शुरू हो जाएंगे। इस अभियान के जरिए कांग्रेस सिर्फ संविधान बचाने की बात नहीं करेगी, बल्कि अपने कार्यकर्ताओं को भी एक्टिव करने की तैयारी में है। संगठन से मिली जानकारी के मुताबिक, अभियान के हर फेज में बड़े नेताओं से लेकर छोटे कार्यकर्ताओं तक, सबको भागीदारी करनी होगी। एआईसीसी पूरे देश में एकसाथ 'संविधान बचाओ' अभियान चला रही है। आज ही राजस्थान के जयपुर में बड़ी रैली हुई, जिसमें कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे खुद पहुंचे थे। ऐसे में उम्मीद जताई जा रही है कि जब छत्तीसगढ़ में रैली होगी तो यहां भी एआईसीसी के किसी बड़े नेता के पहुंचने की संभावना है। करीब 40 दिन तक चलने वाले इस अभियान का असली मकसद मोदी सरकार और बीजेपी को घेरना है। एआईसीसी ने जो एजेंडा भेजा है, उसके मुताबिक मोदी सरकार की 'विपक्षी नेताओं के खिलाफ बदले की राजनीति' और 'संवैधानिक संस्थाओं पर हमले' जैसे मुद्दे जोर-शोर से उठाए जाएंगे। यानी कांग्रेस सीधे जनता के बीच जाकर बताएगी कि लोकतंत्र और संविधान पर कैसे हमला हो रहा है। यह अभियान कांग्रेस के लिए सिर्फ दिखावा नहीं होगा। संगठन इस बहाने अपने जिला और विधानसभा स्तर के कार्यकर्ताओं की एक्टिवनेस भी चेक करेगा। जो नेता या कार्यकर्ता ज्यादा सक्रिय और जनता के बीच पैठ बनाए हुए दिखेंगे, उनकी रिपोर्ट ऊपर तक जाएगी। बाद में संगठन में बदलाव के वक्त इन्हीं एक्टिव चेहरों को तरजीह दी जाएगी। संगठन पर फिलहाल ब्रेक जैसी स्थिति वैसे तो कांग्रेस ने अहमदाबाद अधिवेशन में जिला अध्यक्षों को बड़े अधिकार देने की बात कही थी, लेकिन अभी तक जिला कांग्रेस कमेटियां वही कर रही हैं, जो पीसीसी से निर्देश मिलता है। कोई भी खुद से बड़ा फैसला नहीं ले पा रहा। अब 'संविधान बचाओ' अभियान के जरिए थोड़ी रफ्तार पकड़ने की कोशिश हो रही है।

बिलासपुर में चलती कार पर स्टंट

सनरूफ खोल छत पर बैठकर सिगरेट पी रहे थे बदमाश, कार मालिक को नोटिस, लाइसेंस होगा निरस्त

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में बदमाशों का कार पर सवार होकर स्टंटबाजी करते नजर आए। कार की सनरूफ खोलकर छत पर बैठकर सिगरेट पीते दिखे। स्टंट का यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। घटना सिविल लाइन थाना क्षेत्र की है। बताया जा रहा है कि, शनिवार की रात सिविल लाइन क्षेत्र स्थित अग्रसेन चौक रोड पर कार में तीन युवक सवार थे, जो मस्ती करते हंगामा कर रहे थे। इस दौरान एक युवक खतरनाक तरीके से चलती कार की छत पर बैठ गया। वहीं, दूसरा युवक भी सनरूफ से निकलकर मस्ती करता रहा।

उनके पीछे चल रहे दूसरे कार सवार ने युवकों का वीडियो बना लिया, जो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इसमें ट्रैफिक पुलिस की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठाए जा रहे हैं। एक तरफ ट्रैफिक पुलिस शहर के चौक-चौराहों पर जांच कर नियमों का पालन नहीं करने वालों पर कार्रवाई करने का दावा कर रही है। वहीं, दूसरी तरफ बदमाश खुलेआम ट्रैफिक नियम तोड़ते दिख रहे हैं।

एडिशनल एसपी ट्रैफिक रामगोपाल करियारे ने बताया कि, कार के रजिस्ट्रेशन नंबर के आधार पर वाहन मालिक की पहचान कर ली गई है। उसे नोटिस जारी किया गया है। चेतावनी दी गई है कि कार लेकर थाने पहुंचे। ऐसा नहीं करने पर उसके खिलाफ यातायात नियमों के तहत कार्रवाई की जाएगी।

उन्होंने बताया कि, तय समय में वाहन मालिक गाड़ी लेकर पेश नहीं होगा, तो उसके खिलाफ लाइसेंस निरस्तीकरण की कार्रवाई की जाएगी। साथ ही कार जब्त कर न्यायालयीन कार्रवाई भी की जाएगी। उनका कहना है कि, इस तरह की घटनाएं सड़क पर चल रहे अन्य लोगों की जान जोखिम में डालती हैं। लिहाजा ऐसे मामलों में सख्त कार्रवाई जरूरी है।

डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर अश्लीलता मामले में सुप्रीम कोर्ट सख्त

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट में सोमवार को ऑनलाइन अश्लील कंटेंट की स्ट्रीमिंग पर रोक लगाने की मांग वाली याचिका पर सुनवाई हुई। कोर्ट ने केंद्र सरकार और 9 ओटीटी-सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की बेंच ने कहा कि याचिका एक गंभीर चिंता पैदा करती है। केंद्र को इस पर कुछ कदम उठाने की जरूरत है। यह मामला कार्यपालिका या विधायिका के अधिकार क्षेत्र में आता है। ऐसे भी हम पर आरोप हैं कि हम कार्यपालिका के अधिकार क्षेत्र में दखल देते हैं। फिर भी हम नोटिस जारी कर रहे हैं। केंद्र की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि ओटीटीऔर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर कंटेंट को लेकर कुछ रेगुलेशन पहले से मौजूद हैं। सरकार और नए नियम लागू करने पर विचार कर रही है। याचिकाकर्ता की ओर से एडवोकेट विष्णु शंकर जैन पेश हुए। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट में केंद्र सरकार से ओटीटी और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर अश्लील कंटेंट पर रोक लगाने के लिए दिशा-निर्देश जारी करने की मांग की गई है। याचिकाकर्ता का तर्क है कि ऐसी सामग्री युवाओं और समाज पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।

मुंबई हमले के मास्टरमाइंड की कस्टडी 12 दिन बढ़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुंबई में 26 नवंबर, 2008 को आतंकी हमले के मास्टरमाइंड तहव्वुर हुसैन राणा की कस्टडी 12 दिनों के लिए बढ़ गई है। तहव्वुर राणा को आज दिल्ली के पटियाला हाउस कोर्ट में पेश किया गया। एएनआई ने उसकी हिरासत बढ़ाने के लिए याचिका लगाई थी। एएनआई तहव्वुर राणा को 10 अप्रैल को स्पेशल प्लेन से अमेरिका से भारत लेकर आई थी। उसका प्रत्यर्पण टॉप-सीक्रेट मिशन ऑपरेशन राणा के तहत हुआ था। 10 अप्रैल को उसे स्पेशल एएनआई जज चंद्रजीत सिंह ने उसे 18 दिन की कस्टडी में भेज दिया था। आज राणा की कस्टडी खत्म होने वाली थी। तहव्वुर को अमेरिका के शिकागो में अक्टूबर 2009 में अमेरिकी एजेंसी एफबीआई ने गिरफ्तार किया था। उस पर मुंबई के 26/11 और कोपेनहेगन में आतंकी हमले को अंजाम देने के लिए जरूरी सामान मुहैया कराने का आरोप था।

खड़गे बोले- पहलगाम पर सर्वदलीय बैठक में पीएम नहीं आए

जयपुर (एजेंसी)। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने पहलगाम आतंकी हमले को लेकर पीएम नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा। खड़गे ने कहा- देश की बदकिस्मती है कि जब देश के स्वाभिमान को धक्का पहुंचा हो, उस वक्त आप बिहार में चुनावी भाषण कर रहे थे। सर्वदलीय बैठक में सब दलों के नेता आए, लेकिन दुख है कि पीएम मोदी उस बैठक में नहीं आए।

चीन बोला- पहलगाम हमले की निष्पक्ष जांच हो

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहलगाम हमले को सोमवार को 6 दिन हो गए हैं। दिल्ली से लेकर श्रीनगर तक हलचल नजर आ रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के बीच पीएम आवास में 40 मिनट तक मीटिंग हुई। आतंकी हमले के दो और वीडियो सामने आए हैं। इसमें एक में आतंकी की गोली लगने से एक युवक गिरते दिख रहा है। दूसरे में फायरिंग के दौरान पर्यटक बचने की कोशिश करते नजर आ रहे हैं। ये दोनों वीडियो नीचे ब्लॉग में जाकर देख सकते हैं। चीन की तरफ से पहलगाम हमले को लेकर बयान आया। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि हम मामले की निष्पक्ष जांच चाहते हैं। भारत और पाकिस्तान पड़ोसी हैं, दोनों देश मतभेदों को बातचीत से सुलझाएं। बीते 6 दिन में एक हजार भारतीय वाघा बॉर्डर से पाकिस्तान से भारत लौट चुके हैं। पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान गए

भारतीयों को अपने यात्रा समय को कम करने के लिए कहा गया था। इसी तरह सोमवार (28 अप्रैल तक) 800 पाकिस्तानी भारत से जा चुके हैं। पहलगाम अटैक की रिपोर्टिंग को लेकर केंद्र ने 17 पाकिस्तानी यू-ट्यूब चैनल्स पर बैन लगा दिया। इनमें क्रिकेटर शोएब अख्तर, डॉन न्यूज, समा टीवी और जिओ न्यूज शामिल हैं। सरकार का कहना है कि ये चैनल्स भारत और सुरक्षा एजेंसियों के खिलाफ झूठी और भ्रामक खबरें चला रहे हैं।

राष्ट्रपति भवन में 2025 की पद्म अवॉर्ड सेरेमनी

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू राष्ट्रपति भवन में पहले नागरिक अलंकरण समारोह में पद्म पुरस्कार प्रदान कर रही हैं। पद्म पुरस्कार - देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में से एक हैं जो तीन कैटेगरी पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्म श्री में दिए जाते हैं। सोमवार को ये पुरस्कार कला, सामाजिक कार्य, पब्लिक अफेयर्स, विज्ञान और इंजीनियरिंग, व्यापार और उद्योग, चिकित्सा, साहित्य और शिक्षा, खेल और सिविल सेवा से जुड़े असाधारण लोगों को दिए जा रहे हैं। कला के क्षेत्र में साउथ फिल्मों के एक्टर अजीत, डायरेक्टर शेखर कपूर को पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। वहीं गजल गायक पंकज उधास को मरणोपरांत पद्म भूषण सम्मान

दिया गया। अवॉर्ड उनकी पत्नी फरीदा ने लिया। केंद्र सरकार ने गणतंत्र दिवस से पहले 2025 के लिए 139 पद्म पुरस्कारों का ऐलान किया था। इनमें शारदा सिन्हा, ओसामु सुजुकी समेत 13 हस्तियां ऐसी हैं, जिन्हें मरणोपरांत पुरस्कार दिए जा रहे हैं।

गुजरात में 1700 से ज्यादा बांग्लादेशी हिरासत में

नई दिल्ली (एजेंसी)। कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले में 26 लोगों की मौत के बाद पूरे देश में आक्रोश है। इस हमले के जवाब में केंद्र सरकार ने सख्त फैसला लिया है। सरकार ने कहा है कि भारत में रह रहे पाकिस्तानी नागरिकों को देश से बाहर निकाला जाएगा। वहीं, अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशियों के खिलाफ भी कार्रवाई की जा रही है। विदेश मंत्रालय ने पाकिस्तानी नागरिकों को 27 अप्रैल तक देश छोड़ने के निर्देश दिए हैं। जबकि इलाज के लिए मेडिकल वीजा पर आए नागरिकों के लिए अंतिम तिथि 29 अप्रैल है। इसके बाद उनका रहना अवैध माना जाएगा।

इस आदेश के बाद सभी राज्यों की इंटेलिजेंस एजेंसी एक्टिव हो गई हैं और सभी राज्यों में पाकिस्तानी-बांग्लादेशियों की धड़पकड़ जारी है। अमृतसर के अटारी बॉर्डर से रविवार शाम तक 537 पाकिस्तानी वापस जा चुके हैं। वहीं, पाकिस्तान से 850 भारतीय वापस आ चुके हैं।

गुजरात में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशियों के खिलाफ भी कार्रवाई जारी है। राज्य में तीन दिन में 1700 से ज्यादा बांग्लादेशी हिरासत में लिए जा चुके हैं।

राजस्थान से अब तक 109 पाकिस्तानियों को वापस भेजा गया राजस्थान से अब तक 109 पाक नागरिकों को अटारी बार्डर से पाकिस्तान भेजा जा चुका है। अधिकतर पाक नागरिक जैसमेर, बाड़मेर और जोधपुर इलाकों में रहते हैं।

सिद्धारमैया ने एएसपी को थप्पड़ मारने की कोशिश की

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने सोमवार को बेलगावी में एक रैली के दौरान असिस्टेंट सुपरिटेंडेंट ऑफ पुलिस को थप्पड़ मारने की कोशिश की। दरअसल, सिद्धरमैया जैसे ही भाषण देने के लिए उठे भीड़ में मौजूद कुछ भाजपा कार्यकर्ता नारेबाजी करने लगे। उन्होंने सीएम को काले झंडे भी दिखाए। इससे सिद्धारमैया नाराज हो गए और सुरक्षा में तैनात एएसपी नारायण भरमनी पर भड़क उठे। मामले का वीडियो भी वायरल हो रहा है। नाराज सीएम ने मंच से ही एएसपी से कहा- आप जो भी हैं, यहां आएं। जब एएसपी भरमनी मंच पर पहुंचे तो सीएम ने उनसे पूछा आप क्या कर रहे थे। इसके बाद सीएम ने थप्पड़ मारने के लिए अपना हाथ उठा दिया। एएसपी भरमनी कुछ पीछे हटे तो सिद्धारमैया रुक गए। राज्य में विपक्षी पार्टी भाजपा और जनता दल सेक्युलर ने घटना को लेकर हमलावर हैं।

सिद्धारमैया, आपको सत्ता का अहंकार है। एएसपी को मारने के लिए हाथ उठाना आपके पद को शोभा नहीं देता है।आप मुख्यमंत्री हैं और गली के उपद्रवी की तरह,स्क्क को मारने की कोशिश की। यह माफी के लायक नहीं है। आपका कार्यकाल केवल 5 साल का है, लेकिन सरकारी अधिकारी 60 साल की उम्र तक सेवा करता है। सत्ता स्थायी नहीं है, अपना आचरण सुधारें।

अज्ञात वाहन में कार घुसी, 4 की मौत

धार (एजेंसी)। धार के इंदौर-अहमदाबाद फोरलेन पर सोमवार सुबह करीब 6 बजे स्विफ्ट कार पीछे से अज्ञात वाहन में जा घुसी। कार सवार चार युवकों की मौके पर मौत हो गई। युवक झाबुआ से शादी समारोह में धार जाने के लिए निकले थे। रास्ते में ये हादसा तिरला थाना क्षेत्र के ग्राम बलगांवडी स्थित प्रिंस होटल के पास हुआ। कार नंबर एमपी-45जेए-2571 में सवार युवक रविवार रात करीब 10 बजे झाबुआ से निकले थे। धार के रास्ते पर उनकी कार की किसी भारी वाहन से टक्कर हो गई। भिड़ंत इतनी जबरदस्त थी कि कार के परखच्चे उड़ गए। हादसे के बाद कार के एयरबैग खुल गए थे, लेकिन इसके बाद भी कोई जिंदा नहीं बच पाया। टक्कर इतनी तेज थी कि पिछली सीट पर बैठा एक युवक गाड़ी के सामने वाले शीशे (फ्रंट ग्लास) में फंस गया। सूचना मिलते ही तिरला पुलिस मौके पर पहुंची और ग्रामीणों की मदद से काफी मशक्कत के बाद चारों शवों को कार से बाहर निकाला गया। पोस्टमॉर्टम के लिए सभी शव धार जिला अस्पताल भिजवाए गए हैं। मृतकों की पहचान प्रकाश भूरिया पिता नाथु भूरिया (35) निवासी रतलाम, राजा पिता कालू सिंह भूरिया (30) निवासी झाबुआ, राहुल पिता दयाराम भूरिया (23) निवासी फुलगांवडी और दिलीप पिता रमेश भूरिया (24) के रूप में हुई है।

पर्यावरण मंत्रालय ने केरल फोर लेन टनल प्रोजेक्ट टाला

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। केरल के कोझिकोड और वायनाड जिले के बीच फोर लेन टनल प्रोजेक्ट टाला गया है। केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय के एक्सपर्ट पैनल ने सोमवार को प्रोजेक्ट को परमिशन देने से इनकार कर दिया। मंत्रालय ने इस पर और विचार करने की बात कही है। मंत्रालय के कहा, यह टनल पश्चिमी घाटों और वायनाड में पिछले साल आए लैंडस्लाइड से प्रभावित इलाकों के पास से गुजरती है। यदि टनल बनती है तो पर्यावरण पर बुरा असर पड़ सकता है।

पहलगाम अटैक के बाद पुलवामा की ओर भागे आतंकी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहलगाम हमले के एक हफ्ते बाद अब धीरे-धीरे जांच एजेंसियों को आतंकी हमले की साजिश के सबूत मिलने लगे हैं। एजेंसियों की प्राइमरी इंवेस्टिगेशन जांच और खुफिया जानकारी के मुताबिक, हमले से पांच दिन पहले बैसरन एरिया में एक अज्ञात चीन में बना डीजेआई ड्रोन उड़ता देखा गया था। इसके अलावा घोड़ेवालों से रेकी करवाने का शक भी है। जांच में ऐसे कई अहम खुलासे हुए हैं। बैसरन घाटी पर हमले से 5 दिन पहले ड्रोन उड़ते देखा गया। जांच एजेंसी के मुताबिक, आशंका है कि इसका रेकी करने और संभावित भीड़ का आकलन करने के लिए किया गया। जांच एजेंसियां इसरो की मदद से यह पता करने की तलाश में है कि क्या पहलगाम में असामान्य रेडियो सिग्नल ट्रैफिक देखा गया।

ऐसा अनुमान है कि हथियारों की खेप भी ड्रोन से घाटी में पहुंचाई गई। एजेंसियों को शक है कि आतंकियों ने घोड़ेवालों को पैसे देकर क्षेत्र की रेकी करवाई थी।

बिजली गिरने से यूपी-बिहार में 4 की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तरप्रदेश और बिहार में सोमवार को बिजली गिरने से 4 लोगों की मौत हो गई। उत्तर प्रदेश के अयोध्या में एक बच्ची और फतेहपुर में किसान की मौत हुई। वहीं, बिहार के पटना और हाजीपुर में 1-1 व्यक्ति की मौत हुई है। मौसम विभाग ने आज भी देश के 21 राज्यों में तेज बारिश के साथ आंधी-तूफान की चेतावनी जारी की है। वहीं, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली में हीटवेव का अलर्ट है। राजस्थान में लगातार दूसरे दिन तापमान में बढ़ोतरी होगी। बाड़मेर में रविवार को सबसे ज्यादा तापमान 46.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। इधर, दिल्ली में रविवार को तापमान में थोड़ी गिरावट आई, लेकिन यहां का टेम्परेचर 41.3 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। मौसम विभाग ने पंजाब में अगले पांच दिन लू का यलो अलर्ट जारी किया है।

भारत का मिलिट्री खर्च पाकिस्तान से 9 गुना ज्यादा

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट का कहना है कि 2024 में दुनिया के पांचवे सबसे बड़े देश भारत का सैन्य खर्च 1.6त्न बढ़कर 86.1 बिलियन डॉलर (7.19 लाख करोड़) हो गया है। वहीं, पहलगाम हमले के बाद से न्यूक्लियर मिसाइल दागने की धमकी दे रहे पाकिस्तान का सैन्य खर्च 10.2 बिलियन डॉलर यानी करीब 85,170 करोड़ रहा। सोमवार को जारी ट्रेंड्स इन वर्ल्ड मिलिट्री एक्सपेंडिचर 2024 रिपोर्ट के मुताबिक भारत अपनी सेना पर पाकिस्तान से 9 गुना ज्यादा पैसा खर्च कर रहा है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि सैन्य खर्च करने वाले दुनिया के टॉप 5 देश अमेरिका, चीन, रूस, जर्मनी और भारत हैं। इन पांचों का कुल सैन्य खर्च 1635 बिलियन डॉलर यानी 136.52 लाख करोड़ है। चीन का सैन्य व्यय 7.0 प्रतिशत बढ़कर अनुमानित 314 बिलियन डॉलर हो गया, जो लगातार तीन दशकों की बढ़ोतरी दिखाता है। रूस का सैन्य व्यय 2024 में अनुमानित 149 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया। यह रूस की जीडीपी का 7.1 प्रतिशत और रूसी सरकार के सभी व्यय का 19 प्रतिशत है। यूक्रेन का कुल सैन्य व्यय 2.9 प्रतिशत बढ़कर 64.7 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया, जो रूस के खर्च का 43त्न है। जीडीपी के 34 प्रतिशत हिस्से के साथ, यूक्रेन पर 2024 में किसी भी देश का सबसे बड़ा सैन्य बोझ था।

पाकिस्तान की परमाणु धमकी पर ओवैसी का कड़ा जवाब, मासूमों की हत्या करोगे तो चुप नहीं बैठेंगे

मुंबई (एजेंसी)। पहलगाम आतंकी हमले को लेकर एआईएमआईएम चीफ असदुद्दीन ओवैसी ने रविवार को कहा- पाकिस्तान खुद को न्यूक्लियर पावर बताता है। उनके नेता परमाणु युद्ध की धमकी दे रहे हैं। लेकिन उन्हें याद रखना चाहिए कि अगर किसी देश में घुसकर मासूम लोगों को मारेंगे तो कोई खामोश नहीं बैठने वाला है। जवाब मिलेगा। ओवैसी ने आगे कहा- चाहे सरकार किसी की भी हो। इस तरह से आकर हमारी भारत की सरजमी पर हमला करना। धर्म पूछकर गोली मारना जायज नहीं है, तुमने आईएसआईएस जैसा काम किया है। पाकिस्तान भारत से समय में आधे घंटे नहीं बल्कि आधी सदी पीछे है। हमारा मिलिट्री बजट तुम्हारे देश के बजट से ज्यादा है। दरअसल, ओवैसी का यह बयान पाकिस्तानी रेल मंत्री हनीफ अब्बासी के भारत को परमाणु हमले की धमकी के बाद आया है। अब्बासी ने कहा था कि हमने शाहीन, गोरी और गजनवी जैसी 130 मिसाइल भारत के लिए रखी हैं। अगर भारत सिंधु जल संधि को रोकता है, तो हम उसकी सांसें रोक देंगे। भारत को युद्ध के लिए तैयार रहना होगा। पाक मंत्री- हमारी मिसाइलों का निशाना भारत की तरफ अब्बासी ने कहा कि पाकिस्तान के परमाणु हथियार सजाने के लिए नहीं रखे हैं।

पंजाब-पाक बॉर्डर पर अक्टूबर तक एंटी ड्रोन तकनीक लगेंगी

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब को 31 मई तक नशा मुक्त बनाने के लिए पुलिस ने पूरी योजना बना ली है। सभी जिलों के एसएसपी और सीपी को निर्देश दिए गए हैं। उन्हें तय समय में इस दिशा में कार्रवाई करने को कहा गया है। तय तिथि के बाद पूरे अभियान की समीक्षा की जाएगी। इस दौरान जिन अधिकारियों का काम अच्छा होगा, उन्हें सम्मानित किया जाएगा। वहीं, जिनका काम मानकों के मुताबिक नहीं होगा, उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। यह दावा पंजाब के डीजीपी गौरव यादव ने किया है। उन्होंने कहा कि भारत-पाक सीमा पर एंटी ड्रोन तकनीक लगाने का काम चल रहा है। इसका ट्रायल हो चुका है और हमारे अधिकारी गृह मंत्रालय (एमएचए) के संपर्क में हैं। सितंबर-अक्टूबर तक इसे पूरा कर लिया जाएगा। वहीं, 30 एनडीपीएस मामलों के लिए कोर्ट बनाई जाएगी। इस पर राज्य सरकार 22.8 करोड़ रुपए खर्च करेगी। वहीं, नशा तस्करी में शामिल 31 हवाला ऑपरेटरों को अब तक गिरफ्तार किया जा चुका है।

इस काम में लगे हवाला नेटवर्क को खत्म किया जा रहा है। अब तक 31 हवाला ऑपरेटर गिरफ्तार किए गए हैं और आठ करोड़ से ज्यादा की राशि जब्त की गई है। पाक स्मगलर और भारतीय हवाला ऑपरेटर को भी जब्त किया गया है। 268 ए के तहत प्रॉपर्टी अटैच करना- नशे की कमाई से बनाई गई प्रॉपर्टी को अटैच किया जा रहा है। अवैध तरीके से सरकारी जमीन या बिल्डिंग का उल्लंघन- नशा तस्करों द्वारा अवैध तरीके से सरकारी जमीन या बिल्डिंग का उल्लंघन किया जा रहा है। उन पर कार्रवाई की जा रही है और उन्हें यहां गिराया जाएगा। डीजीपी ने बताया कि नशे के केसों में हमारी पुलिस का आरोपियों को सजा दिलाने का परिणाम बहुत शानदार रहा है। 90त्न कंविक्शन रेट पहुंच गया है।

पहलगाम अटैक पर सीएम उमर अब्दुल्ला का भावुक संबोधन

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर विधानसभा में सोमवार को पहलगाम अटैक में मारे गए पर्यटकों को श्रद्धांजलि दी गई। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा- मेजबान होने के नाते मैं सुरक्षा के लिए जिम्मेदार था। इन लोगों के परिजन से मैं कैसे माफी मांगू। मेरे पास कोई शब्द नहीं है। उमर ने कहा- जम्मू-कश्मीर की सुरक्षा लोगों की चुनी हुई हुकूमत की जिम्मेदारी नहीं है, लेकिन सीएम और टूरिज्म मिनिस्टर होने के नाते मैंने इन्हें बुलाया था। मेजबान होने के नाते मेरी जिम्मेदारी थी कि इन्हें सुरक्षित भेंजू, नहीं भेज पाया। उमर ने कहा- उन बच्चों से क्या कहता, जिन्होंने अपने वालिद को खून में लिपटा हुआ देखा। उस नेवी अफसर की विधवा को क्या कहूं, जिन्हें शादी किए हुए ही चंद दिन हुए थे। कुछ लोगों ने पूछा कि क्या कसूर था हमारा। हम

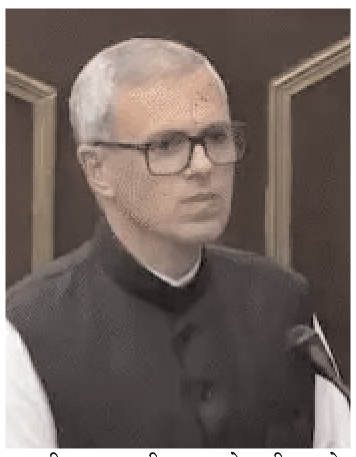

पहली बार कश्मीर आए थे छुट्टी मनाने के लिए। इस छुट्टी का जिंदगी भर खामियाजा भुगतना पड़ेगा।

उमर अब्दुल्ला ने कहा- यकीन नहीं होता कि चंद दिन पहले हम इस सदन में थे और बजट पर कई अन्य मुद्दों पर बहस चली। सदन स्थगित होते होते हम यह उम्मीद कर रहे थे कि श्रीनगर में दोबारा मुलाकात होगी। किसने सोचा था कि जम्मू-कश्मीर में ऐसे हालात बनेंगे कि दोबारा यहां मिलना पड़ेगा। सीएम अब्दुल्ला ने कहा कि स्पीकर साहब आपके आसपास वो लोग बैठे हैं, जिन्होंने खुद अपने रिश्तेदारों को कुर्बान होते देखा है।

हम में से कितने ही हैं, जिन पर हमले हुए हैं। हम चाहते हैं कि इस सदन की तरफ से हमले की निंदा की जाए। मारे गए 26 परिवारों के साथ हम हमदर्दी जाहिर कर सकें। उमर अब्दुल्ला ने कहा- स्पीकर साहब उत्तर से लेकर दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक पूरा देश इस हमले की चपेट में आया है। यह पहला हमला नहीं था। हमने कई हमले होते हुए देखे हैं। हमने अमरनाथ यात्रा, डोडा के गांवों में हमले देखे, कश्मीरी पंडितों की बस्तियों पर हमले देखे, सिख बस्तियों पर हमले देखे। अब्दुल्ला ने कहा कि बीच का ऐसा वक्त आया था, बैसरन का हमला 21 साल के बाद इतना बड़ा हमला है। यह हमला सिविलियंस पर सबसे बड़ा हमला है। यह हमारा मुस्तकबिल नहीं है, यह हमारे अतीत की कहानी है। अब लगता है कि अगला हमला कहां पर होगा। मेरे पास अल्फाज नहीं थे कि क्या बोलूं, मरने वालों के घरवालों से माफी कैसे मांगूं।

विधानसभा में पास प्रस्ताव में कहा गया कि ऐसे आतंकी हमले 'कश्मीरियत', देश की एकता, शांति तथा सद्भावना पर सीधा हमला हैं। विधानसभा ने पीड़ितों और उनके परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए उनके दुख में सहभागी बनने का संकल्प जताया।

केकेआर को खिताब बचाने जीतने होंगे आगे के सारे मुकाबले -अजय जडेजा

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व ऑलराउंडर अजय जडेजा ने कहा है कि गत विजेता कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) की टीम का प्रदर्शन इस सत्र में उम्मीद के अनुसार नहीं रहा है और वह सातवें स्थान पर है पर इसके बाद भी उसके पास अपना खिताब बचाने का अवसर है। जडेजा ने कहा कि इसके लिए उसे अपने बचे हुए मैचों में जीत दर्ज करनी होगी। पंजाब किंग्स के साथ पिछला मैच रद्द होने से केकेआर अब सातवें स्थान पर फिसल गयी है। केकेआर ने 9 मैचों में अब तक केवल तीन मैच ही जीते हैं। ऐसे में उसके लिए अपना खिताब बचाना कठिन होता जा रहा है। उसे अब लीग स्तर पर पांच मैच खेलने हैं जिनमें उसे बेहतर प्रदर्शन करना होगा पर अगर वह इन मैचों में जीतती है तो उसके लिए प्लेऑफ में जगह मिल जाएगी। जडेजा ने कहा, मुझे लगता है कि अगर केकेआर चार में से तीन मैच जीत जीती है, तो उन्हें विश्वास होगा कि उनके पास अभी भी अवसर है।

मुझे लगता है कि कोई भी टीम ऐसा ही करेगी। जब चार में से चार मैच होते हैं, तो इस प्रारूप के कारण यह वास्तव में कठिन हो जाता है। अगर आप बेहतर टीम हैं या आप काफी अच्छा खेल रहे हैं, तो आपको जीतना चाहिए पर ऐसे दिन भी आते हैं जब कोई आकर आपको हरा देता है पर अगर आप उस गेम को जीतना चाहते हैं, तो आपको अपना विश्वास बनाए रखना होगा।

मुंबई के खिलाफ हार के बाद बौखलाए एलएसजी के कप्तान ऋषभ पंत

नई दिल्ली (एजेंसी)। लखनऊ सुपरजायंट्स को एक बार फिर हार का सामना करना पड़ा है। मुंबई इंडियंस ने रविवार को अपने घर में उसे 54 रनों से हरा दिया। इस हार के बाद लखनऊ के कप्तान ऋषभ पंत काफी निराश हैं। उन्होंने मैच के बाद टीम की हार की वजह बताई है और अपने कुछ फैसलों का बचाव भी किया है। उन्होंने किसी एक को हार का दोषी मनाने से इनकार किया है। मुंबई ने इस मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए सूर्यकुमार के 28 गेंदों पर 54, रियान रिकेलटन के 32 गेंदों पर 58 रनों के दम पर पूरे 20 ओवर खेलने के बाद सात विकेट खोकर 215 रन बनाए। लखनऊ की टीम इस स्कोर के जवाब में 161 रनों पर ही ढेर हो गई। इस मैच में पंत ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया था। उनके इस फैसले पर सवाल उठे थे, लेकिन उन्होंने अपने फैसले का बचाव किया है। मैच के बाद पंत ने कहा कि, हमारे लिए ये सही फैसला है। हमें अपनी बैटिंग पर भरोसा है। हम अपने गेंदबाजों को सबसे अच्छे हालात देना चाहते थे लेकिन आज हमारा दिन नहीं है। दूसरी टीम भी शानदार क्रिकेट खेली और आपको अपने आप पर सवाल उठाने से ज्यादा उनको श्रेय देना होगा।

पंत ने अपने नंबर-4 पर बल्लेबाजी करने पर कहा, मैं इस बारे में ज्यादा सोच नहीं रहा हूं। इस तरह के सीजन में आप अपने आप से सवाल कर सकते हैं। मैं ये नहीं करना चाहता। जब टीम जीत रही होती है तो आपको उसके हिसाब से सोचना होता है। ये टीम गेम है।

विराट ने राहुल के ही अंदाज में जश्न मनाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के पूर्व कप्तान विराट कोहली ने दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ आईपीएल मुकाबले में जीत के बाद उसी अंदाज में जश्न मनाया जिस प्रकार से राहुल ने एक सप्ताह पहले आरसीबी के खिलाफ जीत के बाद मनाया था।

आरसीबी ने अब दिल्ली के खिलाफ मैच 7 विकेट से जीता है। इस मैच में आरसीबी की टीम एक समय मुश्किल में थी पर इसके बाद कोहली ने क्रुणाल पंड्या के साथ साझेदारी कर टीम को जीत दिलायी। विराट ने जीत के करीब पहुंचकर छक्का लगाने का प्रयास किया पर वह कैच हो गये। मैच समाप्त होने के बाद जब दिल्ली कैपिटल्स के खिलाड़ी आपस में बात कर रहे थे। तब विराट बड़े प्यार से राहुल के पास गए और उन्होंने राहुल के ही अंदाज में जश्न मनाया। विराट ने इसके बाद राहुल को गले लगा लिया। कोहली जश्न के दौरान मुस्कुराते दिखे, राहल भी तब हंस रहे थे।

इस मुकाबले से पहले पूर्व क्रिकेटर मो कैफ ने भी कहा था कि कोहली दिल्ली आकर राहुल को उन्हीं के अंदाज में जवाब देंगे जो सही साबित हुआ।

वेंकटेश को शीर्ष क्रम में भेजे केकेआर-कुंबले

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व स्पिनर अनिल कुंबले ने कहा है कि आईपीएल के इस सत्र में वेंकटेश अय्यर अब तक बड़ी पारियां नहीं खेल पाये हैं। ऐसे में कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) को उन्हें बल्लेबाजी क्रम में ऊपर भेजना चाहिये। अब तक के मैचों में इस बल्लेबाज को निचले क्रम पर भेजा गया है। ऐसे में उनके ऊपर अधिक दबाव आ जाता है। वेंकटेश ने आईपीएल 2024 में शीर्ष क्रम पर काफी रन बनाये थे पर इस सत्र में उसे चौथे या पांचवें नंबर पर बल्लेबाजी करने के लिए भेजा गया है। पिछले सत्र में वेंकटेश ने पावरप्ले में 220 के स्ट्राइक रेट के साथ शानदार प्रदर्शन किया पर इस बार बल्लेबाजी क्रम में बदलाव के बाद इस बल्लेबाज ने 22.50 की औसत और 139.17 की स्ट्राइक रेट से केवल 135 रन ही बनाए हैं। सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ ही वेंकटेश अच्छी बल्लेबाजी कर पाये थे। कुंबले ने कहा, उनके पास इस खेल में वेंकटेश को बल्लेबाजी क्रम में ऊपर लाने का अवसर था। उन्हें सुनील नरेन के साथ बल्लेबाजी की शुरुआत के लिए भेजा जा सकता है। साथ ही कहा कि गेंदबाजी में एनरिक नॉर्टजे को चेतन सकारिया की जगह शामिल करें। उन्होंने कहा, वेंकटेश पावरप्ले में अपना स्वाभाविक खेल खेल सकता है, ऊपर से हिट कर सकता है। उसने पूर्व में ऐसा किया है उन्होंने कहा, गुणवत्ता और क्षमता के मामले में मुझे लगता है कि केकेआर के पास सब है। अगर आप पिछले साल की तुलना में इस साल की चैंपियनशिप टीम को देखें, तो पाएंगे कि उनके खिलाड़ी उम्मीद के अनुसार प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं। ऐसा नहीं है कि खिलाड़ियों में बहुत ज़्यादा बदलाव हुआ है पर जीत के लिए उसे अधिक प्रयास करने होंगे।

सीएसके को टी20 क्रिकेट की वर्तमान शैली के साथ तालमेल बिठाना होगा : रायुडू

मुम्बई। पूर्व क्रिकेटर अंबाति रायुडू ने आईपीएल के 18 वें सत्र में चेन्नई सुपरकिंग्स (सीएसके) टीम के खराब प्रदर्शन को लेकर कहा है कि उसे टी20 क्रिकेट की वर्तमान शैली के साथ तालमेल बिठाने के लिए और सतर्कता से खेलना होगा। रायुडू ने कहा है कि सीएसके अंतिम ग्यारह में बदलाव करने के बाद भी जीत हासिल नहीं कर पा रही है और यही कारण है कि अंक तालिका में सबसे नीचे 10वें स्थान पर है। रायुडू ने कहा कि यह सीएसके के लिए सबसे कठिन स्थिति है पर एक बड़ी सीख भी दे रही है। वह ये कि अगर आप पुरानी उपलब्धियों पर रुकते हैं और भविष्य की ओर नहीं देखते, तो ऐसा ही होता है। अब वे खेल के साथ विकसित होने को लेकर बहुत सतर्क होंगे। कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी ने भी माना है कि खेल आगे बढ़ गया है और मुझे भरोसा है कि वह अगले सीजन के लिए टीम तैयार करने की योजना बना रहे होंगे। साथ ही कहा कि टीम के पास डेवाल्ट ब्रेविस और आयुष म्हात्रे जैसे उभरते सितारे होना सकारात्मक संकेत हैं। कभी-कभी असफलता ऐसी टीम को जगा देती है और याद दिलाती है कि खेल हमेशा बड़ा होता है।

रायुडू ने सीएसके की बल्लेबाजी की लगातार कमजोरियों पर टिप्पणी करते हुए कहा कि शॉट चयन में कोई भ्रम नहीं है पर उसके बल्लेबाज पर्याप्त शॉट्स नहीं खेल रहे। वे जरूरत से ज्यादा समय ले रहे हैं। रायुडू ने आगे कहा कि टीम में बदलाव की जरूरत थी और अब हम इन मैचों को अगले सत्र के लिए एक तरह का ट्रायल देख रहे हैं। सीएसके अगले सत्र में अधिक खिलाड़ियों को बनाये नहीं रख पायेगा।

जसप्रीत बुमराह को रवि शास्त्री ने किया अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व कोच रवि शास्त्री ने जसप्रीत बुमराह को लेकर खास अलर्ट जारी किया है। उन्होंने कहा कि इंग्लैंड के खिलाफ इस टॉप तेज गेंदबाज को दो मैच के बाद ब्रेक दिया जाना चाहिए। साथ ही कहा कि पूरे आराम के लिए मैच चुनने की आजादी दी जानी चाहिए। भारत 20 जून को हेडिंग्ले में शुरू होने वाली सीरीज में इंग्लैंड से भिड़ेगा जो नए विश्व टेस्ट चैंपियनशिप चक्र की शुरुआत होगी। ऑस्ट्रेलिया दौरे के दौरान लगी पीठ की चोट के कारण बुमराह चैंपियंस ट्रॉफी से बाहर रहे। स्टार गेंदबाज ने मौजूदा इंडियन आईपीएल के दौरान मुंबई इंडियंस के लिए प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में वापसी की। आईसीसी समीक्षा में शास्त्री ने कहा कि मैं बुमराह के साथ सतर्क रहूंगा। मैं उसे एक बार में दो टेस्ट मैच दूंगा और फिर ब्रेक का इंतजार करूंगा। क्रिकेटर से कमेंटेटर बने इस खिलाड़ी ने कहा कि, आदर्श रूप से उसे चार खेलने दें। अगर वह शानदार शुरूआत करता है तो आप उसे पांच मैच खिलाने के लिए ललचाओगे। लेकिन ये उसके शरीर पर निर्भर करता है। इस महान क्रिकेटर ने कहा कि बुमराह को ये तय करने की छूट दी जानी चाहिए कि वह कौन सा मैच छोड़ता चाहता है। उन्होंने कहा कि उसे ये कहते का पहला मौका दिया जाना चाहिए कि हां, मुझे थोड़ी परेशानी हो रही है। एक ब्रेक से मदद मिलेगी। उसे वह ब्रेक दें। उन्होंने कहा कि बुमराह, मोहम्मद शमी और मोहम्मद सिराज की पूरी तरह से फिट भारतीय तेज गेंदबाज तिकड़ी निश्चित रूप से इंग्लैंड को परेशान करेगी। शमी की अनुपलब्धता, पांचवें टेस्ट में बुमराह का चोटिल होना और सिराज की खराब फॉर्म के कारण भारत बॉर्डर-गावस्कर सीरीज 1-3 से हार गया। सिराज ने तब से गुजरात टाइटंस के लिए आईपीएल में शानदार वापसी की है। शास्त्री ने कहा कि मुझे लगता है कि सिराज, जसप्रीत और शमी, ये तीनों अगर पूरी तरह से फिट हैं तो वे इंग्लैंड के लिए इंग्लैंड के लिए मुश्किलें खड़ी कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि जब आप इन तीनों को फिट कर लेते हैं तो ये एक बेहतरीन शीर्ष स्तर का तेज गेंदबाजी आक्रमण होता है। और सिराज एक अलग ही जोश से भरा हुआ है उसकी गति बहुत अच्छी है और वह हर मैच में अच्छा खेल रहा है। इंग्लैंड के आने से पहले भारत के दृष्टिकोण से ये एकदम सही है।

जानें कौन हैं जैकब बेथेल जिन्हें आईपीएल में डेब्यू का मौका मिला

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 के 46वें मुकाबले में दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ आरसीबी एक बदलाव के साथ मैदान में उतरी। अरुण जेटली स्टेडियम में हो रहे मुकाबले में आरसीबी के कप्तानी रजत पाटीदार ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी।

टॉस के दौरान उन्होंने बताया के आरसीबी एक बदलाव के साथ उतरी। फिल सॉल्ट की जगह जैकब बेथेल को आईपीएल डेब्यू का मौका मिला। सॉल्ट की तबियत ठीक नहीं है। ऐसे में जैकब अब विराट कोहली के साथ बल्लेबाजी करते हुए दिखेंगे। इंग्लैंड के ऑलराउंडर जैकब ने अब तक खेले गए 10 टी20 मैचों की 9 पारियों में 3266 की औसत और 14736 की स्ट्राइक रेट से 196 रन बनाए हैं।

अभिनव शॉ ने तीन स्वर्ण पदक जीते

नई दिल्ली (एजेंसी)। युवा अभिनव शॉ ने रविवार को कुमार सुरेंद्र सिंह मेमोरियल निशानेबाजी चैंपियनशिप (केएसएसएम) में 10 मीटर एयर राइफल मिश्रित टीम स्पर्धा में सीनियर, जूनियर और युवा वर्ग में स्वर्ण पदक जीतकर शानदार प्रदर्शन किया। पश्चिम बंगाल के 17 वर्षीय अभिनव ने विभिन्न निशानेबाजों के साथ मिलकर सभी वर्गों में तीनों स्वर्ण पदक जीते। राष्ट्रीय चैंपियनशिप में अब तक के सबसे कम उम्र के पदक विजेता और मिश्रित टीम स्पर्धा में जूनियर विश्व चैंपियन अभिनव ने सीनियर 10 मीटर एयर राइफल मिश्रित टीम फाइनल में विश्व चैंपियनशिप की कांस्य पदक विजेता मेहुली घोष के साथ मिलकर रेलवे की मेघना सज्जनार और शाहू तुषार माने की जोड़ी को 16-4 से हराया। इस स्पर्धा में एलावेनिल वलारिवन और स्मित रमेशभाई मोराडिया ने गुजरात के लिए कांस्य पदक जीता। जूनियर स्पर्धा के स्वर्ण पदक मैच में अभिनव ने स्वाति चौधरी के साथ मिलकर पश्चिम बंगाल को दिन का दूसरा स्वर्ण पदक दिलाया। उन्होंने महाराष्ट्र की शाम्भवी क्षीरसागर और पार्थ राकेश माने को 16-12 से हराया। अभिनव अग्रवाल और गौतमी भनोट ने मध्य प्रदेश के लिए कांस्य पदक जीता। अभिनव ने युवा वर्ग में संद्रता रॉय के साथ स्वर्णिम हैट्रिक पूरी की। इस जोड़ी ने मध्य प्रदेश की निखिल पुंडीर और गौतमी भनोट की जोड़ी को 17-5 से हराया। हरियाणा ने अमीरा अरशद और पुरु राज बिरथल के माध्यम से कांस्य पदक जीता। भोपाल में रिदम सांगवान और आदित्य मालरा ने सीनियर पिस्टल मिश्रित टीम स्पर्धा जीती। हरियाणा की जोड़ी ने स्वर्ण पदक मैच में महाराष्ट्र की राही सरनोबत और प्रणव को 16-14 से हराया। सीनियर मिश्रित टीम पिस्टल स्पर्धा में मौजूदा विश्व चैंपियन शिव नरवाल और कनक ने फिर जूनियर स्पर्धा में राजस्थान पर 16-8 की जीत से हरियाणा को दूसरा स्वर्ण दिलाया। दिल्ली की रश्मिका सहगल ने चैंपियनशिप में अपना चौथा स्वर्ण पदक जीता। उन्होंने युवा वर्ग के स्वर्ण पदक मैच में हार्दिक के साथ मिलकर कर्नाटक को 16-6 से हराया।

जसप्रीत बुमराह ने रचा इतिहास, मेंटर लसिथ मलिंगा का रिकॉर्ड तोड़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंटरनेशनल क्रिकेट हो या आईपीएल चारों तरफ जसप्रीत बुमराह की धूम मची हुई है। बुमराह ने एक नया इतिहास रच दिया है। वानखेड़े स्टेडियम में खेले गए लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ मैच में बुमराह ने एडेन मार्करम का विकेट लेकर मुंबई इंडियंस के लिए सर्वाधिक विकेट लेने का कारनामा अपने नाम किया है। इस दौरान उन्होंने अपनी टीम एमआई के मेंटॉर लसिथ मलिंगा का रिकॉर्ड भी ध्वस्त किया है। जसप्रीत बुमराह ने इस मैच में अपनी पहली विकेट लेते हुए मलिंगा के 170 विकेट के रिकॉर्ड को तोड़ दिया। मलिंगा ने अपने आईपीएल करियर में 122 मैचों में 19.79 मैचों में 19.79 की बेहतरीन औसत से 170 विकेट लिए थे। अब बुमराह 174 विकेट के साथ मुंबई इंडियंस के लिए सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज बन गए हैं। विशेष बात ये है कि बुमराह और मलिंगा दोनों ने अपने पूरे आईपीएल करियर में केवल मुंबई इंडियंस के लिए ही खेला है जो इस उपलब्धि को और भी खास बनाता है। मुंबई इंडियंस के लिए 100 से ज्यादा विकेट लेने वाले अन्य गेंदबाज केवल हरभजन सिंह हैं। ईएसपीएनक्रिकइंफो के अनुसार, जसप्रीत बुमराह मुंबई इंडियंस के एकमात्र गेंदबाज हैं जिन्होंने आईपीएल में कई बार पांच विकेट हॉल हासिल किया है। उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 2022 में कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ आया था, जब उन्होंने 5/10 के आंकड़े दर्ज किए। हालांकि, उस मैच में मुंबई इंडियंस को 52 रनों से हार का सामना करना पड़ा था। बुमराह की गेंदबाजी में विविधता, सटीकता और दबाव में प्रदर्शन करने की क्षमता ने उन्हें इस मुकाम तक पहुंचाया है।

नीरज चोपड़ा के समर्थन में उतरे योगेश्वर दत्त

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के स्टार जेवलिन थ्रोअर और दो बार के ओलंपिक पदक विजेता नीरज चोपड़ा को हाल ही में सोशल मीडिया पर अपमानजनक टिप्पणियों और ट्रोलिंग का सामना करना पड़ा। ये विवाद तब शुरू हुआ जब नीरज ने पाकिस्तान के जेवलिन थ्रोअर और पेरिस ओलंपिक गोल्ड मेडल विजेता अरशद नदीम को बेंगलुरु में होने वाले एनसी क्लासिक में आमंत्रित किया। इस निमंत्रण के बाद नीरज और उनके परिवार की निष्ठा पर सवाल उठाए गए। वहीं अब नीरज चोपड़ा के समर्थन में भारतीय पहलवान योगेश्वर दत्त उतरे हैं। योगेश्वर दत्त ने अपने सोशल मीडिया पोस्ट में नीरज चोपड़ा की देशभक्ति और उनके योगदान की सराहना की। उन्होंने लिखा कि, नीरज भाई, आपको न अपनी देशभक्ति साबित करने की जरूरत है और ना ही खुद को। एक खिलाड़ी और सैनिक ही विदेशी धरती पर

तिरंगा लहराकर देश का नाम रोशन करता है।

आप एक खिलाड़ी होने के साथ-साथ सैनिक भी हैं। उन्होंने आगे लिखा कि, ये लोग जो बकवास करते हैं वे छोटी सोच वाले वैचारिक लोग हैं जिन्हें ना देश से मतलब है और न ही देशभक्ति से। आप चैंपियन हैं, आप राष्ट्र के नेता हैं बस ऐसे ही आगे बढ़ते रहे। चैंपियन हमेशा सर्वश्रेष्ठ होता है। योगेश्वर जो बार एशियाई खेल और राष्ट्रमंडल खेल पदक विजेता रहे हैं उन्होंने नीरज को न केवल एक खिलाड़ी बल्कि देश का गौरव भी बताया है।

बता दें कि, नीरज चोपड़ा ने शुक्रवार को एक लंबे समय सोशल मीडिया पोस्ट में अपनी भावनाओं को व्यक्त किया।

उन्होंने कहा कि पहलगाम आतंकी हमले जिसमें 26 लोगों की जान गई के बाद अरशद नदीम का एनसी क्लासिक में शामिल होना पूरी तरह असंभव था। भारतीय सेना में सूबेदार मेडर के पद पर कार्यरत नीरज ने कहा कि पिछले 48 घंटों में जो कुछ हुआ उसके बाद अरशद का एनसी क्लासिक में आना संभव नहीं था। मेरे देश और उसके हित हमेशा पहले होंगे। उन्होंने आतंकी हमले में अपने लोगों को खोने वालों के प्रति संवेदना व्यक्त की है और कहा कि, मैं पूरे देश के साथ इस घटना से दुखी और गुस्से में हूं। मुझे विश्वास है कि हमारा देश इसका जवाब अपनी ताकत से देगा और न्याय होगा।

आरटीओ का 'जल ही जीवन है' के नाम पर शुरू हुआ नया भ्रष्टाचार

'जल है तो कल है' की रशीद काटकर प्रतिदिन अवैध तरीके से वाहनों से वसूल रहे लाखों रुपये

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिला परिवहन स्क्वायड यानी आरटीओ विभाग हमेशा अपने कारनामो के लिए सुर्खियों में बना रहता है चाहे अवैध वसूली को लेकर हो या अवैध परिवहन पर काली कमाई का जिनको लेकर लगातार शिकायते और खबरे प्रकाशित होती रहती है लेकिन विभाग की अवैध वसूली पर जिम्मेदार अधिकारी मौन ही रहते है। वहीं अब रीवा आरटीओ विभाग भ्रष्टाचार की हद पार करता आ रहा है जहा पर आए दिन पूरे जिले में उड़नदस्ता टीम कही भी चेकिंग लगाकर एंट्री वसूली करते नजर आ जाएंगे।

बताया जा रहा है कि एंट्री के नाम पर विभाग के द्वारा ट्रको को रोककर वसूली की जाती है यदि किसी ट्रक ड्राइवर ने पैसे देने से मना कर दिया तो उसके साथ मारपीट पर उतारू हो जाते है अभी आरटीओ विभाग की उड़नदस्ता टीम ने बसूली करने का नया तरीका अपनाया है जिनके द्वारा हाइवे में खड़े होकर ट्रकों को व अन्य वाहनों को रोककर एंट्री के नाम पर 2000 रुपये से 3000 रुपये तक की जल ही जीवन है कि रसीद में ट्रक का नंबर लिख कर दिया जाता है जबकि जो भी चलानी रसीद होती है उसमें शुल्क लिखा होता है लेकिन आरटीओ विभाग रीवा सारे नियम कायदों को दरकिनार कर दिन रात्रि अवैध बसूली में लगा रहता है वही ट्रक चालकों का कहना है विरोध करने पर ट्रकों को खड़ा करा दिया जाता है या तो मारपीट पर उतारू हो जाते है जबकि ट्रक चालकों के पास परिवहन करने के सभी कागजात उपलब्ध होते है इसके बाद भी जबरन अवैध बसूली की जाती है।

अब सवाल यह उठता है की लगातार शिकायत एवं खबरों का प्रकाशन होने के बाद भी जिला प्रशासन के द्वारा आरटीओ विभाग के खिलाफ कार्यवाही क्यो नही की जाती है।

सतना के सरभंगा को टाइगर-रिजर्व बनाने की मांग

ग्रामीणों ने सीएम के नाम सौंपा ज्ञापन, कहा- पलायन की बातें अफवाह

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना जिले के मझगवां वन परिक्षेत्र में सरभंगा सेंचुरी की मांग जोर पकड़ने लगी है। सोमवार को समाजसेवी आशुतोष द्विवेदी के नेतृत्व में दर्जनों ग्रामीणों ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नाम कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। ग्रामीणों ने सरभंगा को सेंचुरी घोषित करने की मांग करते हुए कहा कि इससे न केवल बाघों की सुरक्षा होगी बल्कि क्षेत्र का पर्यटन भी सशक्त बनेगा।

ग्रामीणों का कहना है कि क्षेत्र में पलायन का डर केवल एक भ्रांति है, जिसे खनिज माफियाओं द्वारा जानबूझकर फैलाया जा रहा है। उनका आरोप है कि माफिया अपने स्वार्थ साधने के लिए भोले-भाले ग्रामीणों को गुमराह कर रहे हैं, जबकि वास्तव में अभ्यारण्य बनने से स्थानीय लोगों को रोजगार के नए अवसर मिलेंगे और जनजातीय समुदाय को भी फायदा होगा।

ग्रामीणों ने बताया कि पिछले डेढ़ दशक में सरभंगा क्षेत्र में 30 से 35 बाघों की मौजूदगी के प्रमाण मिल चुके हैं। अगर अभ्यारण्य को मंजूरी मिलती है, तो बाघों का संरक्षण सुनिश्चित किया जा सकेगा और सतना जिले को पर्यटन के वैश्विक नक्शे पर नई पहचान मिलेगी। धार्मिक और पौराणिक महत्व वाले इस क्षेत्र को संरक्षित करने की दिशा में यह कदम बेहद अहम साबित होगा।

ज्ञापन में यह भी उल्लेख किया गया कि कुछ खदानों के हितों के चलते सरभंगा अभ्यारण्य का प्रस्ताव लंबे समय से अटका हुआ है। ग्रामीणों ने प्रदेश सरकार से अपील की कि धार्मिक और पौराणिक स्थलों को सहेजने की सरकार की नीति के तहत सरभंगा को अभ्यारण्य का दर्जा दिया जाए। इससे क्षेत्र का धार्मिक महत्व सुरक्षित रहेगा और सतना जिले का समग्र विकास संभव होगा।

डिप्टी सीएम के आश्वासन पर संविदा स्वास्थ्य कर्मियों ने स्थगित की हड़ताल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। सोमवार को उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल से संविदा स्वास्थ्य कर्मियों की विभिन्न मांगों के संबंध में विस्तृत चर्चा हुई। इस दौरान एनपीएस, ग्रेच्युटी, स्वास्थ्य बीमा, अनुकम्पा का लाभ सहित अन्य मांगों पर बात हुई। उपमुख्यमंत्री द्वारा एमडी एनएचएम से फोन में बात की गई, जिनके द्वारा बताया गया कि एनपीएस, ग्रेच्युटी, स्वास्थ्य बीमा का प्रस्ताव तैयार किया का चुका है और वित्त विभाग को भेजा जा रहा है। उपमुख्यमंत्री ने आश्वत किया कि संविदा नीति 2023 के अनुसार समस्त लाभ अविलंब प्रदाय किया जाएगा।

इस आश्वाशन के बाद जिला कार्यकारिणी ने उपमुख्यमंत्री का आभार जताते हुए संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी संघ रीवा ने हड़ताल स्थगित रखने का निर्णय लिया है। जिसके बाद रीवा जिले के संविदा कर्मचारी संघ के अध्यक्ष विकाश पांडेय तथा सीएचओ संघ के अध्यक्ष डॉ पंकज उपाध्याय ने सभी संविदा कर्मचारियों से मिलकर हड़ताल स्थगित करने को कहा है।

रीवा में रोजगार के नाम पर छात्राओं को बनाया शिकार, थाने पहुंची छात्राएं

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले में लगातार नौकरी देने के नाम पर ग्रामीण क्षेत्र के छात्र-छात्राओं को ठगी का शिकार बनाया जा रहा है। जहां पहले तो बेरोजगार युवक-युवतियों को सुनहरे सपने दिखाए जाते हैं और बाद में अपने साथ अन्य लोगों को जोड़कर पैसा कमाने का झांसा दिया जाता है। सोमवार को शहर के अमहिया थाना में ऐसा ही एक और मामला सामने आया।

जहां कुछ छात्र-छात्राओं ने पीटीएस में संचालित हो रही इसी तरह की एक कंपनी के संचालक और उसके स्टाफ के खिलाफ शिकायत की है। छात्राओं ने बताया कि उनसे 15 हजार रुपये जमा कराकर कंप्यूटर सीखने के साथ नौकरी देने की बात कही गई थी। लेकिन अब उन्हें अपने साथ अन्य लोगों को जोड़ने पर कमीशन की बात की जा रही है। बताया कि करीब 200 से अधिक छात्र-छात्राएं इस तरह की ठगी का शिकार हो चुके हैं। छात्राओं ने बताया कि पीटीएस के पास टेक गुरु अकादमी के नाम से ऑफिस का संचालन किया जाता है। शिकायत के बाद जब थाने से संचालक अजय पांडे को फोन किया गया तो, संचालक ऑफिस में ताला बंद करके फरार हो गए। इसी तरह से सिविल लाइन थाने में भी काफी संख्या में छात्रों के द्वारा पहुंचकर शिकायत की गई है, जिसमें दो महिलाएं भी शामिल हैं। बतादें कि हाल ही में समान थाना क्षेत्र में इसी तरह की शिकायत पर पुलिस ने कारवाई की थी। जिसमें संचालक को गिरफ्तार कर जेल भी भेजा गया था।

मैहर में 2 पक्षों में विवाद, राहगीर को मारा चाकू, रीवा में भर्ती

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। मैहर जिले के अमरपाटन में डीजे की धुन में डांस करने को लेकर हुए विवाद में एक युवक पर चाकू से हमला कर दिया गया। घायल युवक को उपचार के लिए रीवा के संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वहीं पुलिस आरोपियों की तलाश कर रही है।

घटना के संबंध में घायल विशाल साकेत(28) के पिता लालू साकेत निवासी अमरपाटन ने जानकारी देते हुए बताया कि रविवार की रात पड़ोस में बरहो का कार्यक्रम था। इसी दौरान कुछ लोगों का विवाद डीजे में डांस करने को लेकर हो गया।

दोनों पक्ष आपस में विवाद कर रहे थे इसी दौरान वहां से गुजर रहे विशाल को आरोपियों ने चाकू मार दिया। बताया गया है कि विशाल का इस विवाद से कोई लेना-देना नहीं था। इसके बावजूद भी आरोपियों ने उसे चाकू मार दिया। घायल को तत्काल उपचार के लिए संजय गांधी अस्पताल ले जाया गया। वहीं पुलिस ने घटना की सूचना के बाद आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

6वीं मंजिल से कूदी युवती के शव की अब तक नहीं हुई शिनाख्त

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। नया बस स्टैंड परिसर में मौजूद बिल्डिंग की 6वीं मंजिल से छलांग लगाने वाली युवती की अब तक शिनाख्त नहीं हो पाई है। वारदात के 24 घंटे से अधिक समय बीत जाने के बाद भी पुलिस युवती के शव की पहचान नहीं कर पाई है। जिससे पुलिस की सक्रियता पर भी सवाल खड़े होने लगे हैं। बताया गया कि छत पर युवती का एक बैग भी मिला है। जिसमें उसके कपड़े मिले हैं। उधर दूसरी तरफ युवती की जेब से एक मोबाइल भी बरामद किया गया है। जिसमें घटना से जुड़े अहम सुराग हो सकते हैं। बावजूद इसके पुलिस ने युवती के पहचान करने में सफलता हासिल नहीं की है। इस पूरे मामले में सीएसपी शिवाली चतुर्वेदी का कहना है कि घटना की जांच की जा रही है। मृतका की पहचान की जा रही है।

अब से ई ऑफिस से ही चलेंगी फाइलें

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासन के निर्देशों के अनुसार ई ऑफिस व्यवस्था लागू कर दी गई है। विभिन्न विभागों के मध्य तथा विभागों में एक टेबल से एक से दूसरे अधिकारी के पास फाइलें ई ऑफिस पोर्टल के माध्यम से ही जाएंगी। अब फाइलों का बस्ता लेकर जाने की परेशानी से मुक्ति मिल गई है। इस संबंध में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने कहा है कि जिले में 28 अप्रैल 2025 से सभी कार्यालयों में ई ऑफिस के माध्यम से ही फाइलों का परिचालन होगा। अब कोई भी अधिकारी अन्य माध्यम से फाइल का मूवमेंट नहीं करेगा। जो विभाग अब तक ई ऑफिस में आनबोर्ड नहीं हो पाए हैं वे 30 अप्रैल तक अपने कार्यालय के कर्मचारियों की ई मेल आईडी तैयार करके ई ऑफिस में आनबोर्ड होना सुनिश्चित करें। जिले में 30 अप्रैल के बाद केवल ई ऑफिस से ही फाइलें स्वीकृत की जाएंगी।

उप मुख्यमंत्री ने की एकल नल-जल योजना की समीक्षा की

ग्रामीण एकल नल-जल प्रदाय योजना की बाधाओं को दूर कर तत्काल संचालन प्रारंभ कराने के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि रीवा विधानसभा क्षेत्र की ग्रामीण एकल नल-जल योजना की सभी बाधाओं का निराकरण करते हुए तत्काल संचालन प्रारंभ कराएं। उन्होंने निर्देश दिए कि संबंधित पंचायतों के सरपंच के साथ बैठक कर जल प्रदाय की समस्याओं को दूर करें तथा एक पखवाड़े में सभी नलजल योजनाओं को ग्राम पंचायतों को हस्तांतरित कर सुगम संचालन सुनिश्चित कराएं।

राजनिवास सर्किट हाउस में रीवा विधानसभा क्षेत्र के ग्राम पंचायतों में एकल नल-जल योजना की ग्रामवार समीक्षा करते हुए उप मुख्यमंत्री ने जल प्रदाय योजना की अद्यतन स्थिति की जानकारी ली तथा अधिकारियों को निर्देशित किया कि पाइप लाइन में सुधार, पानी की उपलब्धता, विद्युत कनेक्शन आदि समस्याओं का निराकरण कराएं तथा संबंधित सरपंचों से योजना का संचालन कराएं ताकि घरों में जल प्रदाय समुचित ढंग से होने लगे। उन्होंने रीवा विधानसभा अन्तर्गत 14 ग्राम पंचायतों के 24 ग्रामों में जल प्रदाय के लिए निर्मित एकल नल-जल परियोजना के संबंधित संविदाकारों से पानी की सप्लाई की स्थिति की जानकारी प्राप्त की तथा पीएचई विभाग के कार्यपालन यंत्री को निर्देशित किया कि आवश्यक सुधार कार्य कराकर जल प्रदाय कराएं। उन्होंने कहा कि आगामी 15 दिवस में पुनः बैठक कर की गई कार्यवाही की समीक्षा की जाएगी।

बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी मेहताब सिंह गुर्जर ने बताया कि संबंधित सरपंचों, पीएचई के अधिकारियों तथा सचिव व ग्राम सहायक की समन्वित बैठक में जल प्रदाय की समस्याओं का निराकरण कर घर-घर पानी सप्लाई का कार्य प्रारंभ कर दिया जाएगा। इस अवसर पर समाजसेवी राजेश पाण्डेय ने ग्राम पंचायतों में जल प्रदाय की जानकारी दी तथा आवश्यक सुझाव दिए। बैठक में जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती नीता कोल, एसडीएम अनुराग तिवारी, तहसीलदार एवं प्रभारी सीईओ रीवा जनपद शिवशंकर शुक्ला, जल निगम के अधिकारी, पीएचई के सहायक यंत्री, उपयंत्री तथा संविदाकार उपस्थित रहे।

सतना में क्रेन पर लटकी कार बनी आग का गोला, की जा रही थी शिफ्ट

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में क्रेन से कार शिफ्ट करते समय आग लग गई। धीरे-धीरे आग पूरी कार में फैल गई और वह खराब हो गई। मामला शनिवार का है। इसका वीडियो आज सामने आया है। बताया गया कि गहरा नाला स्थित महिंद्रा यार्ड में एक कार को क्रेन से कृपालपुर रीवा रोड स्थित यार्ड में शिफ्ट किया जा रहा था। कार में अचानक आग लग गई। घटना के बाद यार्ड में अफरा-तफरी मच गई। मौके पर मौजूद लोगों ने आग बुझाने का प्रयास किया लेकिन तब तक कार पूरी तरह जल चुकी थी। हादसे में किसी तरह की जनहानि तो नहीं हुई लेकिन कार जल गई। प्रारंभिक जांच में कार की रिम के गर्म होने से आग लगने की संभावना जताई जा रही है। यार्ड प्रबंधन आग लगने के वास्तविक कारणों की जांच कर रहा है।

थाना प्रभारियों को उत्कृष्ट कार्य के लिए किया आईजी ने पुरस्कृत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जोन के आईजी गौरव सिंह राजपूत ने जोन के अलग अलग थाना प्रभारियों को उत्कृष्ट कार्य के लिए पुरस्कृत किया। जिसके तहत डायल हंड्रेड में शतप्रतिशत फीडिंग के लिए रीवा के समान थाना प्रभारी विकास कपीस एवं सगरा थाना प्रभारी अंकिता मिश्रा सहित कई अन्य थाना प्रभारी पुरस्कृत हुए।

नीट यूजी परीक्षा 4 मई को, कलेक्टर ने परीक्षा के संबंध में दिए निर्देश

नीट यूजी परीक्षा में किसी भी तरह का इलेक्ट्रानिक उपकरण और खाद्य पदार्थ ले जाना रहेगा प्रतिबंधित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। निर्धारित परीक्षा केन्द्रों में 4 मई, रविवार को एनटीए नीट यूजी की परीक्षा निर्धारित परीक्षा केन्द्रों में आयोजित की जा रही है। परीक्षा सुबह 11 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक आयोजित होगी। परीक्षार्थियों को परीक्षा शुरू होने से एक घंटा पहले परीक्षा केन्द्र पहुंचने के निर्देश दिए गए हैं। इस संबंध में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने कहा है कि नीट यूजी परीक्षा में शामिल होने वाले परीक्षार्थी अपने साथ एनटीए वेबसाइट से डाउनलोड किया गया प्रवेश पत्र, पोस्टकार्ड साइज की एक फोटो तथा पासपोर्ट आकार की दो फोटो अवश्य साथ लाएं। इसके साथ-साथ किसी एक अधिकृत फोटो पहचान पत्र की मूल तथा वैध प्रति लेकर आना आवश्यक है। पारदर्शी बोतल में पानी लेकर आने की अनुमति रहेगी।

कलेक्टर ने कहा है कि परीक्षा केन्द्र में जूते पहनने की अनुमति नहीं रहेगी लेकिन कम हील की सैण्डल अथवा चप्पल परीक्षार्थी पहन सकते हैं।

कलेक्टर ने कहा है कि परीक्षा केन्द्र में किसी भी तरह के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे मोबाइल फोन, ब्लूटूथ, इयरफोन, माइक्रोफोन, पेजर, हीटबैण्ड आदि ले जाना पूरी तरह से प्रतिबंधित रहेगा। चश्मा, घड़ी, बेल्ट, कैप, हैण्डबैग, कैमरा, ब्रेसलेट तथा किसी भी तरह के खाद्य पदार्थ का ले जाना भी प्रतिबंधित रहेगा। अपारदर्शी बोतल में पानी ले जाने की अनुमति नहीं रहेगी। परीक्षार्थी हल्के कपड़े पहनें जिनकी आस्तीन लंबी न हों। फैंसी पाकेट, जिपर, बैज आदि लगा न हो। छात्राएं किसी भी तरह के गहने अथवा धातु की बनी वस्तुओं को न पहनें। फैंसी और कढ़ाईदार कपड़े भी न पहनें। परीक्षा में शामिल होने के लिए निर्धारित निर्देशों का पूरी तरह से पालन करें। परीक्षा के संबंध में सोशल मीडिया अथवा अन्य माध्यमों से फैलने वाली तथ्यहीन सूचनाओं और अफवाहों पर ध्यान न दें। अफवाहों की तत्काल पुलिस कंट्रोल रूम को सूचना दें। नीट यूजी परीक्षा में अनुचित साधनों और अपराधों के लिए पब्लिक एग्जामिनेशन अधिनियम 2024 के तहत प्रकरण दर्ज कर कार्यवाही की जाएगी।

मऊगंज में शातिर बदमाशों को पकड़ने के दौरान घायल हुए पुलिसकर्मी

मीडिया ऑडीटर, मऊगंज (निप्र)। मऊगंज पुलिस ने दो शातिर बदमाशों को हथियारों के साथ दबोच लिया है। आरोपियों को बाड़ा कूद कर पकड़ने की कोशिश में कुछ पुलिसकर्मी भी घायल हो गए हैं। दरअसल मऊगंज कस्बे के सुंदरपुरवा के समीप दो युवक हथियार लेकर घूम रहे थे। सूचना पर पुलिस ने घेराबंदी की तो बदमाश बाड़ा कूद कर भागने लगे। बदमाशों को पकड़ने के लिए पुलिस भी बाड़ा कूद गई। जिसके चलते कुछ पुलिसकर्मी कटीली झाड़ियों से जख्मी हो गए। बाद में पीछा कर दोनों को पकड़ लिया। दोनों बदमाशों के पास से पिस्टल बरामद हुई है। आरोपियों की पहचान मनीष सिंह व सुमित मिश्रा के रूप में हुई है। आरोपियों के खिलाफ पुलिस ने आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज कर जांच कर रही है। थाना प्रभारी राजेश पटेल ने बताया कि दोनों आरोपी आदतन अपराधी है। मनीष सिंह पर अपहरण, लूट, एनडीपीएस एक्ट सहित विभिन्न धाराओं के करीब 20 मामले दर्ज है। जबकि दूसरे आरोपी पर 12 मामले दर्ज हैं।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।